परम भक्त

[मी]राबाई की शब्दावली

[जीवन-चरित्र सहित]

मीराबाई की शब्दावली

और

जीवन-चरित्र

जिस में

उन के अति कोमल, मधुर, रसीले और प्रेम रस में पगे हुए पद मुख्य मुख्य अंगों और रागों के अनुसार रक्खे गये हैं।

इस छापे में कुछ शब्द और कड़ियाँ जो अब मिली हैं बढ़ा दो गई हैं और पाठ और अर्थ की गलतियाँ भी दुरुस्त कर दी गई हैं।

प्रकाशक

बेलवीडियर प्रिंटिंग वर्क्स, इलाहाबाद।

नवीं बार] १६७६ [मूल्य १॥)

ted at The Belvedere Printing Wo... By S...

...दे पृष्ठ २५) और
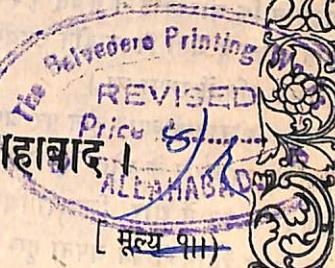
मीराबाई का जीवन-चरित्र

परम भक्त मीराबाई के अनूठे प्रेम और निराली भक्ति की क्या महिमा कही जावे जिसका अब तक हिन्दुस्तान भर में दृष्टान्त दिया जाता है। वास्तव में यह एक अचरजी ... कि विष के प्याले को यद्यपि जानती थीं कि जहर है पर जो कि वह चरनामृत के नाम से ... गया उसके पीने में कुछ सोच विचार न किया। भक्तमाल के कर्त्ता नाभाजी ने इनके प्रेम की ... में यह छप्पै लिखा है—

सदरिस[1] गोपिन प्रेम प्रगट कलिजुगहिं दिखायो।
निरअंकुस अति निडर रसिक जस रसना गायो॥
दुष्टन दोष बिचारि मृत्यु को उद्यम कीयो।
बार न बांको भयो गरल अमृत ज्यों पीयो॥
भक्ति निसान बजाय के काहू तें नाहीं लजी।
लोक लाज कुल शृङ्खला[2] तजि मीरा गिरधर भजी॥

यह परम भक्त बाई जी जोधपुर के मेरता राठोर रतनसिंह जी की इकलौती ... मेरता (मारवाड़ देश) के राव दूदा जी की पोती थीं। इनका जन्म कुड़की नामक गांव ... उन गांवों में से है जो कि उनके पिता को गुजारे के लिये दूदा जी से मिले थे) संबत् १५... १५६० विक्रमी के दर्मियान हुआ और उदयपुर (मेवाड़) के ससोदिया राजकुल में ... सांगाजी के कुंवर भोजराज के साथ संवत् १५७३ विक्रमी में ब्याही गईं।

इनके देहान्त के समय का ठीक पता नहीं चलता। मुन्शी देवीप्रसाद जी मु... जोधपुर ने इनके जीवन-चरित्र में एक भाट की जुबानी लिखा कि इनका देहान्त संव... विक्रमी अर्थात् सन् १५४६ ईसवी में हुआ परन्तु भक्तमाल से इन दो बातों का प्रमान ... है—(१) अकबर बादशाह तानसेन के साथ इनके दर्शन को आया, (२) गुसाईं तुल... से इनका परमार्थी पत्र ब्यौहार था। समझने की बात है कि अकबर सन् १५४२ में पैद... सन् १५५६ ई० में तख्त पर बैठ और गुसाईं तुलसीदास जी सन् १५३३ (संवत् १५... में पैदा हुए तो यदि मीराबाई के देहान्त का समय १५४६ ई० में माना जाय तो अकब... उस समय चार बरस की होती है और गुसांईं जी की चौदह बरस की, जो कि न तो ... साध दर्शन की उमंग उठने की अवस्था मानी जा सकती और न गुसांईं जी की भक्ति ... की प्रसिद्धि का समय कहा जा सकता है। इसलिए हमको भारतेन्दु श्री हरिश्चन्द्र जी ... अनुमान कि मीराबाई ने संबत् १६२० और १६३० विक्रमी के दर्मियान शरीर त्या... जान पड़ता है जैसा कि उन्होंने उदयपुर दर्बार की सम्मति से निर्णय किया था और ... की एक प्रति में छापा था।

मीराबाई ब्याह होने पर अपने पति के साथ चित्तौड़ गईं और उनके पति का ... होने से दस बरस के भीतर हो गया परन्तु इनको इस महा विपत का विशेष शोक न ... भगवत भजन में और जियादा चित्त को लगा कर प्रीत प्रतीत की दृढ़ता के साथ ... हुईं और रैदासजी को अपना गुरू धारन किया। इस बात को रैदासजी की बानी में ... चरित्र लिखने के समय हम पक्के तौर पर निश्चित नहीं कर सके थे परन्तु अब मीरा... ...ने से उसका विश्वास होता है—देखो पृष्ठ १७ कड़ी ८ शब्द ४१ की पृष्ठ २... ...१ कड़ी १४ की और पृष्ठ ३२ कड़ी ७ शब्द १ की।

(१) ... (२) ... की जंजीर।

बचपन ही से मीराबाई को परमार्थ की चाव और गिरधरलालजी का इष्ट था। इस इष्ट
ट कारन इनकी माता कही जाती हैं कि जिन से इन्होंने पड़ोस में एक कन्या का विवाह होते
र पूछा था कि मेरा दूल्हा कौन है और इनकी माता ने हँस कर गिरधर लाल की मूरत को
या था। कहीं कहीं ऐसी भी कथा प्रसिद्ध है कि इस मूरत के मीराबाई के बाप के घर आने
योग यह हुआ कि एक बार वहाँ एक साधू ठहरा था जिसकी पूजा में यह मूरत थी। मीराबाई
मूरत का नाम पूछा और फिर साधू से उसको माँगा। साधू ने देने से इनकार किया। इस
ीराबाई ने ऐसा हठ धारा कि दो तीन दिन तक भोजन नहीं किया तब उनके माता पिता ने
ाधू को बहुत कुछ देकर विनयपूर्वक राजी करना चाहा परन्तु साधू बोला कि हम अपने इष्टदेव
दापि अलग न होंगे। रात को साधूजी की मूरत ने स्वप्न दिया कि यदि तुम अपना भला चाहते
हमको उस लड़की के पास रहने दो। बेचारा साधू सवेरा होते ही गिरधरलाल जी की मूरत
राबाई के पिता के घर पहुँचा आया।

एक कथा के अनुसार मीराबाई पिछले जन्म में श्रीकृष्णचन्द्र की सखियों में थीं जिनकी
क्ति से प्रसन्न होकर भगवान ने बरदान दिया था कि कलियुग में हम निज रूप से तुम्हारे
गे जिसका इशारा राग सावन के नवें शब्द को नंबर २ और ३ में है (देखो पृष्ठ ४२)।

जब मीराबाई विधवा हो गईं और भगवत भजन और साधु सेवा बेधड़क निरंतर करने
उनके देवर महाराना विक्रमाजीत को (जो अपने भाई महाराना रतनसिंह के बाद चित्तोड़
पर बैठे थे) इनके यहाँ साधुओं की भीड़ भाड़ का लगा रहना न सुहाया और दो भरोसे
लो चम्पा और चमेली नामक को इनके पास तैनात किया कि इनको समझाती और साधुओं
बैठने से रोकती रहें, पर मीराबाई के संग के प्रताप से थोड़े ही दिनों में उन पर भी भक्ति
चढ़ गया और मीराबाई के प्रयोजन की सहायक बन गईं। यही दशा और सहेलियों और
की हुई जो मीरा जी के बरजने और उन पर चौकसी रखने के काम पर नियत की गईं।
राना ने यह कठिन काम अपनी सगी बहिन ऊदा बाई (मीराबाई की ननद) को सौंपा और
समय तक अपने कर्त्तव्य को बड़ी तन्देही से अंजाम देती रहीं। दिन में कई बार मीराबाई
में जाकर उनको हर तरह पर समझौती देतीं और रोक टोक करती थीं। थोड़े से पद
मीराबाई ने इन विरोधियों की चर्चा की है चुन कर इस ग्रन्थ में इकट्ठे कर दिये गये हैं।
मीराबाई और ऊदाबाई का प्रश्नोत्तर भी है।

जब ऊदाबाई की समझौती का कुछ भी मीराबाई पर असर नहीं हुआ तब राना ने
कर किसी मंत्री की सलाह से मीराबाई के पास विष का कटोरा भगवत चरनामृत के
भेजा। ऊदाबाई जो इस भेद को जानती थीं उन्होंने मोह बस मीराबाई से सब हाल कह
र उनको उसको पीने से रोकना चाहा पर मीराबाई ने बड़ी दृढ़ता से उत्तर दिया कि जो
गवत चरनामृत के नाम से आया है उसका प्रत्याग करना भक्ति के प्रन के विरुद्ध है और
पर चढ़ा कर बड़े उत्साह के साथ पी गईं। कोई कोई लिखते हैं कि इसी ज़हर से
ई ने प्राण त्याग किया परन्तु कई पुस्तकों और खुद मीराबाई के ऐसे पदों से जिनके छेपक
संदेह नहीं है यही प्रमान मिलता है कि विष का मीरा बाई पर उलटे यह असर हुआ कि
ा भगवत प्रेम का चढ़ गया और कहते हैं कि उस विष का असर द्वारिका में रनछोड़ जी की
र पड़ा जिसके मुँह से झाग निकलने लगा।

कथा है कि एक दिन मीराबाई कीर्तन कर रही थीं कि ऊदा बाई पहुँची तो मीरा जी ने
रच कर गाया "जब से मोहि नँद नँदन दृष्टि पड़्यो माई" (देखो पद पृष्ठ २५) और

कुछ ऐसी दया दृष्टि की कि ऊदाबाई के चित्त में इनकी महिमा समा गई और इनको गुरु धारन किया। तब एक स्त्री ने राना के सामने बीड़ा उठाया कि मैं मीराबाई को ठीक कर दूंगी पर उसके सामने आते ही मीरा जी ने कुछ ऐसी मौज की कि वह तन मन से उनकी दासी बन गई और राना के महल का जाना छोड़ दिया। सच है भक्तों के दर्शन और सतसंग की ऐसी ही महिमा है जैसा कि कबीर साहिब ने कहा है—

पारस में अरु संत में, बड़ो अंतरो जान। वह लोहा कंचन करै, यह करें आप समान॥

कहते हैं कि एक बार ऊदाबाई ने बड़ी दीनता और प्रेम से हठ किया कि हमको गिरधर-लाल जी का प्रत्यक्ष दर्शन करा दो। मीराबाई ने उनका सच्चा उमंग देखकर आज्ञा की कि चम्पा चमेली आदिक सहेलियों को लेकर गिरधरलाल की पहुनाई की सामग्री तैयार करों। जब सब भोग आदिक ठीक हो गया तब मीराबाई उन लोगों के बीच में बैठ गईं और बिरह और प्रेम के पद बना कर गाने लगीं। जब कइं घण्टे मीरा जी को कीर्तन करते बीत गये और उनको बिरह और बेकली असह हो गई तो आधी रात को श्रीकृष्ण ने साक्षात् प्रगट होकर उनको गले लगा लिया और बोले कि तुम क्यों ऐसी अधीर हो गईं, फिर सब के सामने मीरा जी के साथ भोजन करने लगे। पहरेदारों ने मर्द को आवाज सुन कर राना को सोते से जगा कर ख़बर दी कि मीराबाई के महल में कोई मर्द आया है और उनसे हँसी दिल्लगी हो रही है। राना क्रोध से भर कर तलवार खींचे दौड़ा और महल में घुस कर इधर उधर ढूंढ़ने लगा, पर जब कोई पुरुष दिखाई न दिया तो खिसिया कर मीराबाई से पूछने लगा। मीराबाई बोलीं कि मेरे परम मित्र गिरधरलाल जी तो तुम्हारी आंखों के सामने विराजमान हैं मुझसे क्यों पूछते हो। राना ने चारों ओर दृष्टि फैला कर देखा पर सिवाय प्रेमी स्त्रियों के कोई दीख न पड़ा, थोड़ी देर पीछे पलंग पर बड़ा भयानक नरसिंह रूप दरसा जिसको देखते ही राना थरथरा कर भूमि पर गिर पड़ा, फिर सुधि सँभाल कर यह कहता हुआ भागा कि हमारे कुल देव एकलिंग जी हैं उनका इष्ट क्यों नहीं करतीं तुम्हारे इष्ट की तो बड़ी डरावनी सूरत है।

इन चमत्कारों को देखने पर भी राना ने अपनी हठ नहीं छोड़ी और एक दिन कई नागिन पिटारी में बन्द करके मीराबाई के पास पूजा के फूल और हार के नाम से भेजा। जब मीराबाई ने पिटारी को खोला तो सालिग्राम की मूरति और फूलों के सुगंधित हार निकले।

जब फिर भी राना उपाधि उठाता ही रहा और मीराबाई की भक्ति में बिघ्न डालता रहा तब मीरा जी ने घबड़ा कर गुसाईं तुलसीदास जी को यह पद लिख कर भेजा—

श्री तुलसी सुख निधान, दुख-हरन गुसाईं।
बारहि बार प्रनाम करूं, अब हरो सोक समुदाई॥
घर के स्वजन हमारे जेते, सबन उपाधि बढ़ाई।
साधु संग अरु भजन करत, मोहिं देत कलेस महाई॥
बालपने तें मीरा कीन्हीं, गिरधर लाल मिताई।
सो तो अब छूटत नहिं क्यों हूँ, लगी लगन बरियाई॥
मेरे मात पिता के सम हो, हरि भक्तन सुखदाई।
हमको कहा उचित करिबो है, सो लिखियो समुझाई॥

इस पत्र के उत्तर में गुसाईं तुलसीदास जी ने एक पद और एक सवैया लिख भेजे—

पद—जा के प्रिय न राम बैदेही।
तजिये ताहि कोटि बैरी सम, यद्यपि परम सनेही॥

तज्यो पिता प्रह्लाद, बिभीषन बंधु, भरत महतारी।
बलि गुर तज्यो, कंत ब्रज-बनिता, भये सब मंगलकारी॥
नातो नेह राम सो मनियत, सुहृद सुसेब्य जहाँ लों।
अंजन कहा आँख जो फूटे, बहुतक कहों कहाँ लौं॥
तुलसी सो सब भाँति परम हित, पूज्य प्रान तें प्यारो।
जा सों होय सनेह राम पद, एतो मतो हमारो॥

सवैया—सो जननी सो पिता सोई भ्रात, सो भामिन सो सुत सो हित मेरो।
सोई सगो सो सखा सोई सेवक, सो गुर सो गुर साहिब चेरो॥
सो तुलसी प्रिय प्रान समान, कहाँ लौं बताइ कहों बहुतेरो।
जो तजि गेह को देह को नेह, सनेह सों राम को होय सबेरो॥

इस उत्तर के पाने पर मीराबाई ने चित्तौड़ छोड़ने का मनसूबा पक्का किया और ऊदाबाई को आज्ञा की कि तुम यहीं बनी रहो और आप गेरुवा वस्त्र पहिन कर रात के समय चम्पा चमेली आदिक सेवकों के साथ अपने मायके मेड़ता को आईं। यहाँ यह बड़े आदर सत्कार से रक्खी गईं परन्तु साधुओं के आने जाने की थोड़ी बहुत देखभाल और मुहाँचाई यहाँ होती रही जिससे मीराजी का मन इस जगह भी न रुचा और कुछ दिन पीछे वृन्दावन को सिधारीं।

वृन्दावन में साधुओं और भक्तों का दर्शन करती हुई मीराबाई जीव गुसाईं के स्थान पर उनके दर्शन को गईं परन्तु जीव गुसाईं ने उनको बाहर ही कहला भेजा कि हम स्त्रियों से नहीं मिलते। इस पर मीराजी ने जवाब दिया कि वृन्दावन में मैं सब को सखी रूप जानती थी और पुरुष केवल गिरधरलाल जी को सुना था पर आज मालूम हुआ कि उनके और भी पट्टीदार हैं! इस प्रेम रस में भिने हुए बचन को सुन कर गुसाईं जी अति लजित हुए और नंगे बाहर आकर मीराजी को बड़े आदर भाव से अपने स्थान में ले गये।

कुछ समय वृन्दावन में रह कर मीराबाई द्वारिका को आईं और रनछोड़ जी के दर्शन और साधुओं की सेवा में मगन रहती थीं।

परन्तु जब से उन्होंने चित्तौड़ छोड़ा राना विक्रमाजीत पर बड़े संकट आये। गुजरात के बादशाह सुल्तान बहादुर (औवल ने चढ़ाई करके चित्तौड़ लूट लिया और राना ने बूँदी देश को भाग कर पनाह ली। चित्तौड़ की गद्दी पर उसके छोटे भाई उदय सिंह बैठे सो वह भी विपत्त पर विपत्त ही उठाते रहे। अब इन लोगों को मीराबाई सरीखी भक्त की महिमा जान पड़ी कि भक्तों के चरन जहाँ पधारते हैं वहाँ कष्ट और उपाधि पास नहीं फटक सकते, तब मंत्रियों की सलाह से कई प्रतिष्ठित ब्राह्मणों को इनके लिवा लाने को द्वारिका भेजा। परन्तु मीराबाई ने राना और उसके मंत्रियों के दुर्मति के विचार से चित्तौड़ जाना अंगीकार न किया, तब ब्राह्मणों ने धरना दिया कि जब तक चित्तौड़ न चलोगी हम अन्न जल न छुयेंगे। अन्त को मीराबाई हार मानकर और बेकल होकर रनछोड़ जी से बिदा होने के बहाने उनके मन्दिर में गईं और कहते हैं कि मूरत में अलोप हो गईं, केवल उनके वस्त्र का एक छोर मूरत के मुँह से पहचान के लिए निकला रहा। मीराबाई के मुख से अंतिम दो पद जिनको गाकर वह रनछोड़ जी में समाई यह कहे जाते हैं—

(१) हरि तुम हरो जन की भीर॥ टेक॥
द्रोपदी की लाज राख्यो तुम बढ़ायो चीर॥ १॥
भक्त कारन रूप नरहरि धरयो आप सरीर॥ २॥
हिरनकस्यप मारि लीन्हो धरयो नाहिन धीर॥ ३॥

परम भक्त मीराबाई

नाथ तुम जानत हो घट घट की

बेलवीडियर प्रिंटिंग वर्क्स, इलाहाबाद।
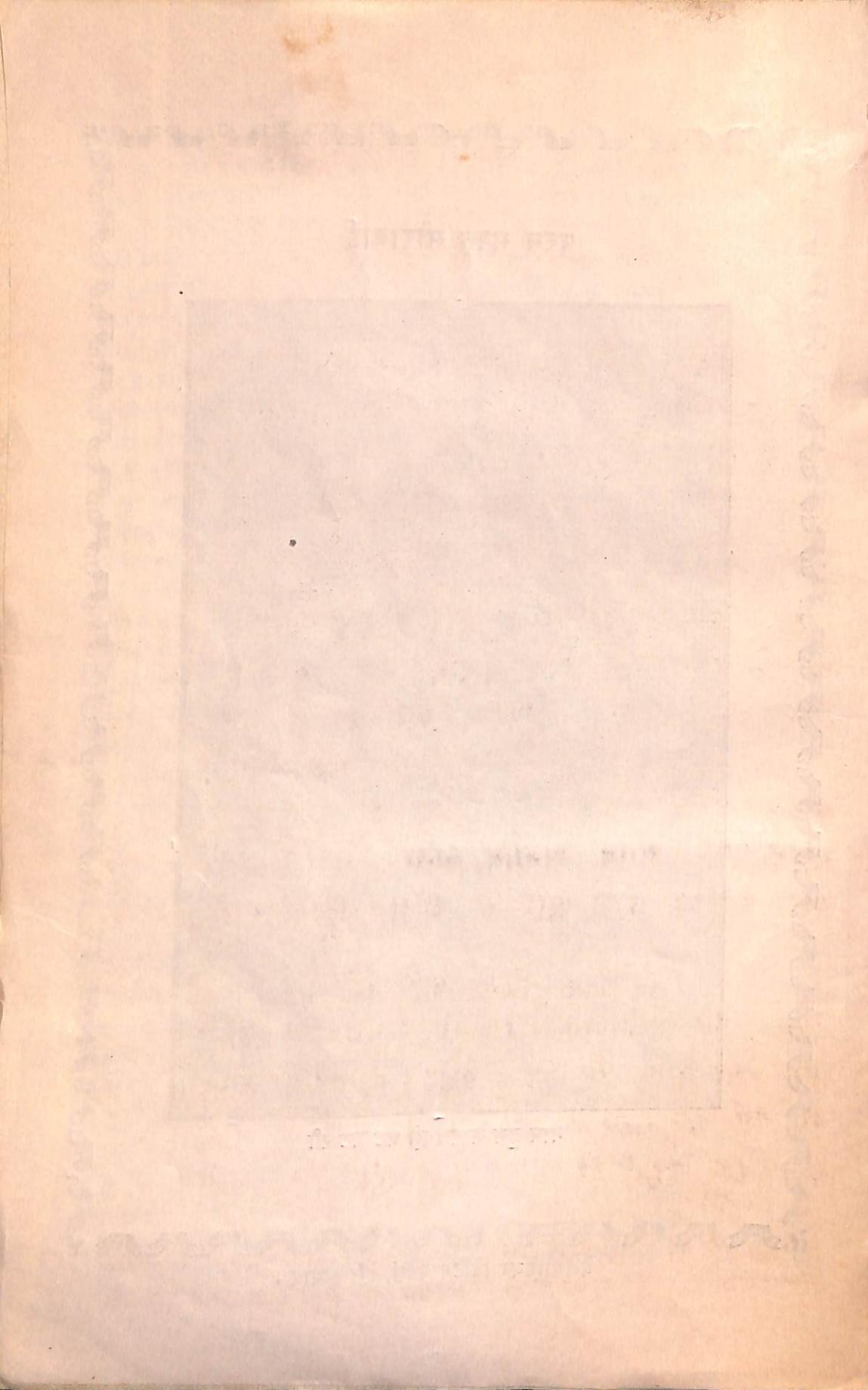
मीराबाई की शब्दावली

चेतावनी का अंग

॥ शब्द १ ॥

जग में जीवणा थोड़ा, राम कुण[1] कह रे जंजार[2] ॥ टेक ॥
मात पिता तो जन्म दियो है, करम दियो करतार ॥ १ ॥
कइ रे खाइयो कइ रे खरचियो, कइ रे कियो उपकार ॥ २ ॥
दिया लिया तेरे संग चलेगा, और नहीं तेरी लार ॥ ३ ॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, भज उतरो भवपार ॥ ४ ॥

॥ शब्द २ ॥

मनखा[3] जनम पदारथ पायो, ऐसी बहुर न आतो ॥ टेक ॥
अब के मोसर[4] ज्ञान बिचारो, राम राम मुख गातो।
सतगुरु मिलिया सुञ्झ[5] पिछाणी, ऐसा ब्रह्म मैं पाती ॥ १ ॥
सगुरा सूरा अमृत पीवे, निगुरा प्यासा जाती।
मगन भया मेरा मन सुख में, गोबिंद का गुण गाती ॥ २ ॥
साहब पाया आदि अनादि, नातर[6] भव में जाती।
मीरा कहे इक आस आप की, औराँ[7] सूँ सकुचाती ॥ ३ ॥

॥ शब्द ३ ॥

भज मन चरन कँवल अबिनासी ॥ टेक ॥
जेताइ दीसे धरनि गगन बिच, तेताइ सब उठि जासी।
कहा भयो तीरथ ब्रत कीन्हे, कहा लिये करवत कासी ॥ १ ॥
इस देही का गरब न करना, माटी में मिल जासी।
यो संसार चहर[8] की बाजो, साँझ पड़्याँ उठि जासी ॥ २ ॥

---

(१) कोई। (२) जन-जानवर = नर-पशु। (३) मनुष्य का। (४) अवसर। (५) सूझ। (६) नहीं तो। (७) दूसरों। (८) चिहरा या चहर बया चिड़िया को कहते हैं—मतलब यह है कि यह संसार चिड़ियों के खेल सरीखा है जो साँझ होते ही बसेरे को चल देती हैं।

कहा भयो है भगवा पहर्‌याँ, घर तज भये सन्यासी ।
जोगी होय जुगति नहिं जानी, उलटि जनम फिर आसी ॥ ३ ॥
अरज करों अबला कर जोरे, स्याम तुम्हारी दासी ।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, काटो जम की फाँसी ॥ ४ ॥

॥ शब्द ४ ॥

भज ले रे मन गोपाल गुणा ॥ टेक ॥
अधम तरे अधिकार भजन सूँ, जोइ आये हरि की सरणा ।
अबिस्वास तो साखि बताऊँ, अजामेल गणिका सदना ॥१॥
जो कृपाल तन मन धन दीन्हों, नैन नासिका मुख रसना ।
जा को रचत मास दस लागे, ताहि न सुमिरो एक छिना ॥२॥
बालापन सब खेल गँवाया, तरुन भयो जब रूप घना ।
बृद्ध भयो जब आलस उपज्यो, माया मोह भयो मगना ॥३॥
गज अरु गीदहु तरे भजन सूँ, कोऊ तर्‌यो नहिं भजन बिना ।
धना भगत पीपा पुनि सेवरी, मीरा की हूँ करो गनना ॥४॥

उपदेश का अङ्ग

॥ शब्द १ ॥

मन रे परसि हरि के चरण ॥ टेक ॥
सुभग सीतल कँवल कोमल, त्रिबिधि ज्वाला हरण ।
जिण चरण प्रहलाद परसे, इन्द्र पदवी धरण ॥ १ ॥
जिण चरण ध्रुव अटल कीणे, राखि अपणी सरण ।
जिण चरण ब्रह्मांड भेट्यो, नख सिख सिरी धरण ॥ २ ॥
जिण चरण प्रभु परसि लीणो, तरी गोतम घरण[1] ।
जिण चरण काली नाग नाथ्यो, गोपि लीला करण ॥ ३ ॥
जिण चरण गोबरधन धार्‌यो, इंद्र को गर्व हरण ।
दासि मीरा लाल गिरधर, अगम तारण तरण ॥ ४ ॥

(१) घरवाली, स्त्री ।

॥ शब्द २ ॥

राम नाम रस पीजे मनुआँ, राम नाम रस पीजे ॥ टेक ॥
तज कुसंग सतसंग बैठ नित, हरि चरचा सुण लीजे ॥ १ ॥
काम क्रोध मद लोभ मोह कूँ, चित से बहाय दीजे ॥ २ ॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, ताहि के रँग में भींजे ॥ ३ ॥

बिरह और प्रेम का अङ्ग

॥ शब्द १ ॥

माई म्हाँरी हरि न बूझी बात ।
पिंड में से प्राण पापी, निकस क्यूँ नहिं जात ॥ १ ॥
रैण अँधेरी बिरह घेरी, तारा गिणत निस जात ।
ले कटारी कंठ चीरूँ, करूँगी अपघात ॥ २ ॥
पाट[1] न खोल्या मुखाँ न बोल्याँ, साँझ लग परभात ।
अबोलना में अवध बीती, काहे की कुसलात ॥ ३ ॥
सुपन में हरि दरस दीन्हों, मैं न जाण्यो हरि जात ।
नैन म्हाँरा उघड़ि[2] आया, रही मन पछतात ॥ ४ ॥
आवण आवण होय रह्यो रे, नहिं आवण की बात ।
मीरा ब्याकुल बिरहनी रे, बाल ज्यों बिल्लात ॥ ५ ॥

॥ शब्द २ ॥

घड़ी एक नहिं आवड़े[3], तुम दरसण बिन मोय ।
तुम हो मेरे प्राण जी, का सूँ जीवण होय ॥ टेक ॥
धान[4] न भावे नींद न आवे, बिरह सतावे मोय ।
घायल सी घूमत फिरूँ रे, मेरा दरद न जाणे कोय ॥ १ ॥
दिवस तो खाय गमायो रे, रैण गमाई सोय ।
प्राण गमायो झूरताँ[5] रे, नैण गमाई रोय ॥ २ ॥
जो मैं ऐसा जाणती रे, प्रीत किये दुख होय ।
नगर ढँढोरा फेरती रे, प्रीत करो मत कोय ॥ ३ ॥

---

(१) परदा । (२) खुल गया । (३) सोहावै । (४) अन्न । (५) तरस तरस कर ।

पंथ निहारूँ डगर बुहारूँ, ऊभी[1] मारग जोय।
मीरा के प्रभु कब रे मिलोगे, तुम मिलियाँ सुख होय॥ ४॥

॥ शब्द ३॥

हे री मैं तो प्रेम दिवानी, मेरा दरद न जाणे कोय॥ टेक॥
सूली ऊपर सेज हमारी, किस बिध सोणा होय।
गगन मँडल पै सेज पिया की, किस बिध मिलणा होय॥ १॥
घायल की गत घायल जानै, को जिन लाई होय।
जौहरी की गत जौहरी जानै, की जिन जौहर होय॥ २॥
दरद की मारी बन बन डोलूँ, बैद मिल्या नहिं कोय।
मीरा की प्रभु पीर मिटैगी, जब बैद सँवलिया होय॥ ३॥

॥ शब्द ४॥

नींदलड़ी नहिं आवै सारी रात, किस बिध होइ परभात[2]॥टेक॥
चमक[3] उठी सुपने सुध भूली, चंद्र कला न सोहात॥ १॥
तलफ तलफ जिव जाय हमारो, कब रे मिले दीना-नाथ॥ २॥
भई हुँ दिवानी तन सुध भूली, कोई न जानी म्हाँरी बात॥ ३॥
मीरा कहै बीती सोइ जानै, मरण जीवण उन हाथ॥ ४॥

॥ शब्द ५॥

जोगिया ने[4] कहियो रे आदेस।
आऊँगी मैं नाहिं रहूँ रे, कर जटाधारी भेस॥ १॥
चीर को फाड़ूँ कंथा[5] पहिरूँ, लेऊँगी उपदेस।
गिणते गिणते घिस गई रे, मेरी उँगलियों की रेख॥ २॥
मुद्रा माला भेष लूँ रे, खप्पड़ लेऊँ हाथ।
जोगिन होय जग ढूँढ़सूँ रे, रावलिया के साथ॥ ३॥
प्राण हमारा वहाँ बसत है, यहाँ तो खाली खोड़[6]।
मात पिता परिवार सूँ रे, रही तिनका तोड़॥ ४॥

---

(१) खड़ी हुई। (२) सबेरा। (३) चौंक। (४) से। (५) मेखला। (६) खोल, देह।

पाँच पचीसो बस किये, मेरा पल्ला न पकड़ै कोय।
मीरा ब्याकुल बिरहनी, कोइ आन मिलावै मोय ॥ ५ ॥

॥ शब्द ६ ॥

नैणा मोरे बाण पड़ी, साईं मोहिं दरस दिखाई ॥ टेक ॥
चित्त चढ़ी मेरे माधुरि मूरत, उर बिच आन अड़ी ॥ १ ॥
कैसे प्राण पिया बिनु राखूँ, जीवण मूर जड़ी[1] ॥ २ ॥
कब की ठाढ़ी पंथ निहारूँ, अपणे भवन खड़ी ॥ ३ ॥
मीरा प्रभु के हाथ बिकानी, लोक कहे बिगड़ी ॥ ४ ॥

॥ शब्द ७ ॥

मैं हरि बिन क्यों जिऊँ री माय ॥ टेक ॥
पिय कारन बौरी[2] भई, जस काठहि घुन खाय।
औषध मूल न संचरे, मोहिं लागो बौराय[3] ॥ १ ॥
कमठ दादुर बसत जल महँ, जलहि तें उपजाय।
मीन जल के बीछुरे तन, तलफि के मरि जाय ॥ २ ॥
पिय ढूँढ़न बन बन गई, कहुँ मुरली धुनि पाय।
मीरा के प्रभु लाल गिरधर, मिलि गये सुखदाय ॥ ३ ॥

॥ शब्द ८ ॥

मैं अपने सैयाँ सँग साँची।
अब काहे की लाज सजनी, प्रगट है नाची ॥ १ ॥
दिवस भूख न चैन कबहिन, नींद निसु नासी।
बेध वार को पार ह्वैगो, ज्ञान गुह[3] गाँसी ॥ २ ॥
कुल कुटुम्ब सब आनि बैठे, जैसे मधु मासी[4]।
दास मीरा लाल गिरधर, मिटी जग हाँसी ॥ ३ ॥

॥ शब्द ९ ॥

ऐसे पिया जान न दीजे हो ॥ टेक ॥
चलो री सखी मिलि राखि के, नैना रस पीजे हो ॥ १ ॥
स्याम सलोनो साँवरो, मुख देखे जीजे हो ॥ २ ॥

---

(१) बूटी। (२) बौरापन। (३) गुप्त। (४) शहद की मक्खी।

जोइ जोइ भेष सों हरि मिलैं, सोइ सोइ भल कीजे हो ॥ ३ ॥
मीरा के गिरधर प्रभू, बड़ भागन रीझे हो ॥ ४ ॥

॥ शब्द १० ॥

यहि बिधि भक्ति कैसे होय ।
मन की मैल हिय तें न छूटी, दियो तिलक सिर धोय ॥ १ ॥
काम कूकर लोभ डोरी, बाँधि मोहिं चडाल ।
क्रोध कसाई रहत घट में, कैसे मिलै गोपाल ॥ २ ॥
बिलार[1] बिषया लालची रे, ताहि भोजन देत ।
दीन हीन ह्वै छुधा रत से, राम नाम न लेत ॥ ३ ॥
आपहि आप पुजाय के रे, फूले अंग न समात ।
अभिमान टीला किये बहु, कहु जल कहाँ ठहरात ॥ ४ ॥
जो तेरे हिये अंतर की जाने, ता सों कपट न बनै ।
हिरदे हरि को नाम न आवे, मुख तें मनिया[2] गनै ॥ ५ ॥
हरी हितु से हेत कर, संसार आसा त्याग ।
दास मीरा लाल गिरधर, सहज कर बैराग ॥ ६ ॥

॥ शब्द ११ ॥

हमरे रौरे लागलि कैसे छूटै ॥ टेक ॥
जैसे हीरा हनत निहाई । तैसे हम रौरे बनि आई ॥ १ ॥
जैसे सोना मिलत सोहागा । तैसे हम रौरे दिल लागा ॥ २ ॥
जसे कमल नाल बिच पानी । तैसे हम रौरे मन मानी ॥ ३ ॥
जैसे चंदहि मिलत चकोरा । तैसे हम रौरे दिल जोरा ॥ ४ ॥
जैसे मीरा पति गिरधारी । तैसे मिलि रहु कुञ्जबिहारी ॥ ५ ॥

॥ शब्द १२ ॥

स्याम तेरी आरति लागी हो ।
गुरु परतापे पाइया तन दुरमति भागी हो ॥ १ ॥

---

(१) बिलाव । (२) माला के दाने ।

था तन को दियना करों मनसा करों बाती हो।
तेल भरावों प्रेम का बारों दिन राती हो ॥ २ ॥
पाटी पारों ज्ञान की मति माँग सँवारों हो।
तेरे कारन साँवरे धन जोबन वारों हो ॥ ३ ॥
यह सेजिया बहु रंग की बहु फूल बिछाये हो।
पंथ में जोहों[1] स्याम का अजहूँ नहिं आये हो ॥ ४ ॥
सावन भादों ऊमड़ो बरषा रितु आई हो।
भौंह घटा घन घेरि के नैनन झरि लाई हो ॥ ५ ॥
मात पिता तुम को दियो तुम हीं भल जानो हो।
तुम तजि और भतार को मन में नहिं आनों हो ॥ ६ ॥
तुम प्रभु पूरन ब्रह्म हो पूरन पद दीजे हो।
मीरा ब्याकुल बिरहनी अपनी करि लीजे हो ॥ ७ ॥

॥ शब्द १३ ॥

आली साँवरो कि दृष्टि, मानो प्रेम की कटारी है ॥ टेक ॥
लागत बेहाल भई तन की सुधि बुद्धि गई,
तन मन ब्यापो प्रेम मानो मतवारी है ॥ १ ॥
सखियाँ मिलि दुइ चारी बावरी सी भई न्यारी,
हौं[2] तो वा को नीके जानों कुंज को बिहारी है ॥ २ ॥
चंद को चकोर चाहै दीपक पतंग दाहै,
जल बिना मीन जैसे तैसे प्रीत प्यारी है ॥ ३ ॥
बिनती करों हे स्याम लागों मैं तुम्हारे पाम[3],
मीरा प्रभु ऐसे जानो दासी तुम्हारी है ॥ ४ ॥

॥ शब्द १४ ॥

सखी री लाज बैरन भई ॥ १ ॥
श्री लाल गोपाल के सँग काहे नाहीं गई ॥ २ ॥

---

(१) ढूंढ़ रही हूँ। (२) मैं। (३) पाँव।

कठिन क्रूर अक्रूर आयो साजि रथ कहँ नई ॥ ३ ॥
रथ चढ़ाय गोपाल लै गो हाथ मींजत रही ॥ ४ ॥
कठिन छाती स्याम बिछुरत बिरह तें तन तई ॥ ५ ॥
दास मीरा लाल गिरधर बिखर क्यों ना गई ॥ ६ ॥

॥ शब्द १५ ॥

मेरो मन बसि गो गिरधर लाल सों ॥ टेक ॥
मोर मुकुट पीताम्बरो गल बैजन्ती माल ।
गउवन के सँग डोलत हो जसुमति को लाल ॥ १ ॥
कालिंदी के तीर हो कान्हा गउवाँ चराय ।
सीतल कदम की छाहियाँ हो मुरली बजाय ॥ २ ॥
जसुमति के दुवरवाँ ग्वालिन सब जाय ।
बरजहु आपन दुलरुवा हम सों अरुझाय ॥ ३ ॥
बृन्दाबन क्रीड़ा करै गोपिन के साथ ।
सुर नर मुनि सब मोहे हो ठाकुर जदुनाथ ॥ ४ ॥
इन्द्र कोप घन बरखो मूसल जल धार ।
बूड़त बृज को राखेऊ मोरे प्रान अधार ॥ ५ ॥
मीरा के प्रभु गिरधर हो सुनिये चित लाय ।
तुम्हरे दरस की भूखी हो मोहिं कछु न सोहाय ॥ ६ ॥

॥ शब्द १६ ॥

सखी री मैं तो गिरधर के रँग राती ॥ टेक ॥
पचरँग मेरा चोला रँगा दे, मैं झुरमट[1] खेलन जाती ।
झुरमट में मेरा साईं मिलेगा, खोल अडम्बर गाती[2] ॥ १ ॥
चंदा जायगा सुरज जायगा, जायगा धरण अकासी ।
पवन पाणी दोनों ही जायँगे, अटल रहे अबिनासी ॥ २ ॥

(१) एक खेल जिसमें स्त्रियाँ एक दूसरे का हाथ पकड़ कर घूमती हैं। (२) मनोराज का वस्त्र जो शरीर पर बाँध रक्खा है।

सुरत निरत का दिवला सँजो ले, मनसा की कर बाती।
प्रेम हटी[1] का तेल बना ले, जगा करे दिन राती ॥ ३ ॥
जिन के पिय परदेस बसत हैं, लिखि लिखि भेजें पाती।
मेरे पिय मो माहिं बसत हैं, कहूँ न आती जाती ॥ ४ ॥
पीहर बसूँ न बसूँ सास घर, सतगुरु सब्द सँगाती।
ना घर मेरा ना घर तेरा, मीरा हरि रँग राती ॥ ५ ॥

॥ शब्द १७ ॥

नातो[2] नाम को मो सूँ तनक न तोड़्यो जाय ॥ टेक ॥
पानाँ ज्यूँ पीली पड़ी रे, लोग कहै पिंड रोग।
छाने[3] लाँघन[4] मैं किया रे, राम मिलण के जोग ॥ १ ॥
बाबल[5] बैद बुलाइया रे, पकड़ दिखाई म्हाँरी बाँह[6]।
मूरख बैद मरम नहिं जाणे, करक[7] कलेजे माँह ॥ २ ॥
जाओ बैद घर आपणे रे, म्हाँरो नाँव न लेय।
मैं तो दाधो[8] बिरह की रे, काहे कूँ औषद[9] देय ॥ ३ ॥
माँस गलि गलि छीजिया रे, करक रह्या गल आहि[10]।
आँगुलियाँ की मूँदड़ी, म्हारे आवण लागी बाँहि ॥ ४ ॥
रहु रहु पापी पपिहरा रे, पिव को नाम न लेय।
जे कोइ बिरहन साम्हले[11], तो पिव कारण जिव देय ॥ ५ ॥
खिण मन्दिर खिण आँगणे रे, खिण खिण ठाढ़ी होय।
घायल ज्यूँ घूमूँ खड़ी, म्हाँरी बिथा न बूझै कोय ॥ ६ ॥
काढ़ि कलेजो मैं धरूँ रे, कौवा तू ले जाय।
ज्याँ देसाँ म्हाँरो पिव बसै रे, वे देखत तू खाय ॥ ७ ॥
म्हाँरे नातो नाम को रे, और न नातो कोय।
मीरा ब्याकुल बिरहनी रे, पिय दरसण दीज्यो मोय ॥ ८ ॥

---

(१) हाट=दूकान। (२) रिश्ता। (३) छिप कर। (४) फ़ाक़ा। (५) बाप। (६) नाड़ी। (७) दर्द। (८) जली हुई। (९) दवा। (१०) हाड़। (११) सुन पावै।

|| शब्द १८ ||

तेरा कोइ नहिं रोकनहार, मगन होय मीरा चली ॥ टेक ॥
लाज सरम कुल की मरजादा, सिर से दूर करी ।
मान अपमान दोऊ धर पटके, निकली हुँ ज्ञान गली ॥ १ ॥
ऊँची अटरिया लाल किवड़िया, निरगुन सेज बिछी ।
पचरंगी झालर सुभ सोहै, फूलन फूल कली ॥ २ ॥
बाजूबंद कड़ूला सोहै, माँग सेंदूर भरी ।
सुमिरन थाल हाथ में लीन्हा, सोभा अधिक भली ॥ ३ ॥
सेज सुखमणा मीरा सोवे, सुभ है आज घरी ।
तुम जावो राणा घर अपणे, मेरी तेरी नाहिं सरी ॥ ४ ॥

|| शब्द १९ ||

बंसीवारो आयो म्हाँरे देस, थाँरी साँवरी सुरत वालो बैस[१] ॥टेक॥
आऊँ जाऊँ कर गया साँवरा, कर गया कौल[२] अनेक ।
गिणते गिणते घिस गईं उँगली, घिस गइ उँगली की रेख ॥१॥
मैं बैरागणि आदि की, थाँरे म्हाँरे कद[३] को सनेस[४] ।
बिन पाणी बिन साबुन साँवरा, हुइ गइ धुई सपेद ॥२॥
जोगिण हुइ जंगल सब हेरूँ, तेरा न पाया भेस ।
तेरी सुरत के कारणे, धर लिया भगवा भेस[५] ॥३॥
मोर मुकट पीताम्बर सोहै, घूँघर वाला केस ।
मीरा को प्रभु गिरधर मिल गये, दूणा बढ़ा सनेस[४] ॥४॥

|| शब्द २० ||

ऐसी लगन लगाय कहाँ तू जासी ॥ टेक ॥
तुम देखयाँ बिन कल न पड़त है, तलफ तलफ जिय जासी ॥१॥
तेरे खातर[६] जोगण[७] हूँगी, करवत[८] लूँगी कासी ॥२॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, चरण कँवल की दासी ॥३॥

---

(१) कम उमर । (२) क़रार । (३) कब । (४) सनेह । (५) लँगोट पहिनने वाले यानी साधुओं का भेष । (६) वास्ते । (७) जोगिन । (८) करवत आरी को कहते हैं—मशहूर है कि काशी में एक स्थान पर आरी लगी थी जिस पर गला काट देने से लोग समझते थे कि भगवन्त से तुर्त मेला हो जाता है ।

॥ शब्द २१ ॥

जोगिया तू कब रे मिलेगो आई ॥ टेक ॥
तेरेहि कारण जोग लियो है, घर घर अलख जगाई ॥ १ ॥
दिवस न भूख रैन नहिं निद्रा, तुझ बिन कुछ न सुहाई ॥ २ ॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, मिल कर तपत बुझाई ॥ ३ ॥

॥ शब्द २२ ॥

मेरे परम सनेही राम की, नित ओलूँड़ी[1] आवे ॥ टेक ॥
राम हमारे हम हैं राम के, हरि बिन कुछ न सुहावे ॥ १ ॥
आवण कह गये अजहु न आये, जिवड़ो अति उकलावे ॥ २ ॥
तुम दरसण की आस रमइया, निस दिन चितवत जावे ॥ ३ ॥
चरण कँवल को लगन लगी अति, बिन दरसण दुख पावे ॥ ४ ॥
मीरा कूँ प्रभु दरसण दीन्हा, आनँद बरण्यो न जावे ॥ ५ ॥

॥ शब्द २३ ॥

चलो अगम के देस काल देखत डरे ।
वहँ भरा प्रेम का हौज हंस केलाँ करे ॥ टेक ॥
ओढ़न लज्जा चीर धीरज को घाघरो ।
छिमता[2] काँकण[3] हाथ सुमत को मुन्दरी[3] ॥ १ ॥
काँचो है बिस्वास चूड़ो चित ऊजलो ।
दिल दुलड़ी[3] दरियाव साँच को दोवड़ो[3] ॥ २ ॥
दाँतों अमृत मेख[4] दया का बोलणो ।
उबटन गुरु को ज्ञान ध्यान को धोवणो ॥ ३ ॥
कान[3] अखोटा[5] ज्ञान जुगत को झूठणो[3] ।
बेसर[3] हरि को नाम काजल है धरम को ॥ ४ ॥
जीहर[3] सील सँतोष निरत को घूँघरो[3] ।
बिंदली[3] गज[3] और हार[3] तिलक गुरु ज्ञान को ॥ ५ ॥

(१) याद । (२) छिमा । (३) नाम गहने का । (४) चोंप । (५) अबिनाशी ।

सज सोलह सिंगार पहिरि सोने राखड़ी[१]।
साँवलिया सूँ प्रीत औरों से आखड़ी[२] ॥ ६ ॥
पतिबरता की सेज प्रभू जी पधारिया।
गावे मीरा बाई दासी कर राखिया ॥ ७ ॥

॥ शब्द २४ ॥

कूण बाँचे पाती, बिन प्रभु कूण बाँचै पाती ॥ टेक ॥
कागद ले ऊधो जी आये, कहाँ रहे साथी।
आवत जावत पाँव घिसा रे (बाला) अँखियाँ भई राती[३] ॥ १ ॥
कागद ले राधा बाँचण बैठी, भर आई छाती।
नैन नीरज[४] में अंब[५] बहे रे (बाला), गंगा बहि जाती ॥ २ ॥
पाना[६] ज्यूँ पीली पड़ी रे (बाला), अन्न नहिं खाती।
हरि बिन जिवड़ो यूँ जलै रे (बाला), ज्यूँ दीपक संग बाती ॥ ३ ॥
साँचा कुछ चकोर चंदा, झोलै[७] बहि जाती।
ब्रज नारी की बीनती रे (बाला), राम मिले मिल जाती ॥ ४ ॥
मनै[८] भरोसौ राम को रे (बाला), डूबत तारचौ हाथी।
दास मीरा लाल गिरधर, साँकड़ारो[९] साथी ॥ ५ ॥

॥ शब्द २५ ॥

बैद को सारो[१०] नाहीं रे माई, बैद को नहिं सारो ॥ टेक ॥
कहत ललिता[११] बैद बुलाऊँ, आवै नन्द को प्यारो।
वो आयाँ दुख नाहिं रहैगो, मोहिं पतियारो[१२] ॥ १ ॥
बैद आयकर हाथ जो पकड़यो, रोग है भारो।
परम पुरुष की लहर ब्यापी, डस गयो कारो ॥ २ ॥
मोर चंदो[१३] हाथ ले, हरि देत है डारो।
दासी मीरा लाल गिरधर, बिष कियो न्यारो ॥ ३ ॥

(१) नाम गहने का। (२) दूरी। (३) लाल। (४) कंवल। (५) पानी। (६) पान। (७) झोंका। (८) मुझको। (९) संकट में। (१०) बस। (११) नाम सखी का। (१२) भरोसा। (१३) मोर का पंख।

॥ शब्द २६ ॥

कैसे जिऊँ री माई, हरि बिन कैसे जिऊँ री ॥ टेक ॥
उदक[1] दादुर[2] पीनवत[3] है, जल से ही उपजाई ।
पल एक जल कूँ मीन बिसरे, तलफत मर जाई ॥ १ ॥
पिया बिना पीली भई रे (बाला), ज्यों काठ घुन खाई ।
औषध मूल न संचरै[4] रे (बाला), बैद फिर जाई ॥ २ ॥
उदासी होय बन बन फिरूँ रे, बिथा तन छाई ।
दास मीरा लाल गिरधर, मिल्या है सुखदाई ॥ ३ ॥

॥ शब्द २७ ॥

बड़े घर ताली[5] लागी रे, म्हाँरा मन री उणारथ[6] भागी रे ॥टेक॥
छीलरिये[7] म्हाँरो चित नहीं रे, डाबरिये[8] कुण जाव ।
गंगा जमुना सूँ काम नहीं रे, मैं तो जाय मिलूँ दरियाव[9] ॥१॥
हालथाँ मोल्याँ[10] सूँ काम नहीं रे, सीख[11] नहीं सिरदार ।
कामदाराँ[12] सूँ काम नहीं रे, मैं तो जाब[13] करूँ दरबार ॥२॥
काच कथीर सूँ काम नहीं रे, लोहा चढ़े सिर भार ।
सोना रूपा सूँ काम नहीं रे, म्हाँरे हीराँ रो बोपार[14] ॥३॥
भाग हमारो जागियो रे, भयो समँद[15] सूँ सीर[16] ।
अमृत प्याला छाँड़ि कै, कुण पीवे कड़वो नीर ॥४॥
पीपा[17] कूँ प्रभु परच्यौ[18] दीन्हो, दिया रे खजीना[19] पूर ।
मीरा के प्रभू गिरधर नागर, धणी[20] मिल्या छै[21] हजूर ॥५॥

॥ शब्द २८ ॥

यो तो रँग धत्ताँ[22] लग्यो ए माय ॥ टेक ॥
पिया पियाला अमर रस का, चढ़ गई घूम घुमाय[23] ।

---

(१) पानी । (२) मेंढक । (३) मोटा । (४) फायदा न करे । (५) लगन । (६) जग की कामना । (७) छिछला तालाब । (८) छोटा गढ़ा पानी का । (९) समुद्र । (१०) हवाली मवाली । (११) नसीहत । (१२) कारपरदाज़ अफसर । (१३) जब = जवाब, अर्थ यह है कि मुझे राज के अधिकारियों से प्रयोजन नहीं सीधे राजा से बात करूँगी । (१४) मैं काँच, राँगा, लोहा, चाँदी सोने का ब्यौपार नहीं करती बल्कि हीरे का । (१५) समुद्र । (१६) मेल । (१७) एक भक्त का नाम । (१८) परचा । (१९) खजाना । (२०) खाविन्द, मालिक । (२१) है । (२२) खूब । (२३) जोश का नशा ।

या तो अमल म्हाँरो कबहु न उतरे, कोट करो न उपाय ॥ १ ॥
साँप पिटारो[1] राणाजी भेज्यो, द्यो मेड़तणी[2] गल डार ।
हँस हँस मीरा कंठ लगायो, यो तो म्हाँरे नौसर हार[3] ॥ २ ॥
बिष को प्यालो राणा जी मेल्यो, द्यो मेड़तणी ने पाय ।
कर चरणामृत पी गई रे, गुण गोबिंद रा गाय ॥ ३ ॥
पिया पियाला नाम का रे, और न रंग सोहाय ।
मीरा कहै प्रभु गिरधर नागर, काचो रंग उड़ जाय ॥ ४ ॥

॥ शब्द २९ ॥

तुम्हरे कारण सब सुख छोड़्या, अब मोहिं क्यूँ तरसावो ॥१॥
बिरह बिथा[4] लागी उर अंदर, सो तुम आय बुझावो ॥२॥
अब छोड़्याँ नहिं बनै प्रभु जी, हँस कर तुरत बुलावो ॥३॥
मीरा दासी जनम जनम की, अंग सूँ अंग लगावो ॥४॥

॥ शब्द ३० ॥

प्यारे दरसण दीज्यो आय, तुम बिन रह्यो न जाय ॥ टेक ॥
जल बिन कँवल चंद बिन रजनी, ऐसे तुम देख्याँ बिन सजनो ।
याकुल ब्याकुल फिरूँ रैण दिन, बिरह कलेजो खाय ॥१॥
दिवस न भूख नींद नहिं रैणा, मुख सूँ कथत न आवै बैणा ।
कहा कहूँ कुछ कहत न आवै, मिलकर तपत बुझाय ॥२॥
क्यूँ तरसावो अंतरजामी, आय मिलो किरपा कर स्वामी ।
मीरा दासी जनम जनम की, परी तुम्हारे पाय ॥३॥

॥ शब्द ३१ ॥

मैं तो म्हाँरा रमैया ने, देखबो करूँ री ॥ टेक ॥
तेरो ही उमरण तेरो ही सुमरण, तेरो ही ध्यान धरूँ री ॥१॥
जहाँ जहाँ पाँव धरूँ धरणी पर, तहाँ तहाँ निरत करूँ री ॥२॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, चरणाँ लिपट परूँ री ॥३॥

(१) पिटारा । (२) मीराबाई । (३) नौ लड़ी का हार । (४) पीड़ा रूपी अग्नि ।

॥ शब्द ३२ ॥

साजन घर आवो मीठा बोला[1] ॥ टेक ॥
कब की खड़ी खड़ी पंथ निहारूँ, थाँहीं आया होसी भला ॥१॥
आवो निसंक संक मत मानो, आयाँही सुख रहला ॥२॥
तन मन वार करूँ न्योछावर, दीजो स्याम मोहेला ॥३॥
आतुर बहुत बिलम नहिं करणा, आयाँही रंग रहेला ॥४॥
तेरे कारण सब रंग त्यागा, काजल तिलक तमोला[2] ॥५॥
तुम देख्याँ बिन कल न परत है, कर धर रही कपोला[3] ॥६॥
मीरा दासी जनम जनम की, दिल की घुणडी खोला ॥७॥

॥ शब्द ३३ ॥

पिया इतनी बिनती सुण मोरी, कोइ कहियो रे जाय ॥ टेक ॥
औरन सूँ रस बतियाँ करत हो, हम से रहे चित चोरी ॥१॥
तुम बिन मेरे और न कोई, मैं सरणागत तोरी ॥२॥
आवण कह गये अजहुँ न आये, दिवस रहे अब थोरी ॥३॥
मीरा कहे प्रभु कब रे मिलोगे, अरज करूँ कर जोरी ॥४॥

॥ शब्द ३४ ॥

पिया अब घर आज्यो मोरे, तुम मोरे हूँ[4] तोरे ॥टेक॥
मैं जन[5] तेरा पंथ निहारूँ, मारग चितवत तोरे ॥१॥
अवध[6] बदीती[7] अजहुँ न आये, दुतियन[8] सूँ नेह जोरे ॥२॥
मीरा कहे प्रभु कब रे मिलोगे, दरसन बिन दिन दोरे[9] ॥३॥

॥ शब्द ३५ ॥

जोगिया री प्रीतड़ी[10] है, दुखड़ा[11] री मूल ॥ टेक ॥
हिल मिल बात बनावत मीठी, पीछे जावत भूल ॥१॥
तोड़त जेज[12] करत नहिं सजनो, जैसे चपेली[13] के फूल ॥२॥
मीरा कहे प्रभु तुम्हरे दरस बिन, लगत हिवड़ा में सूल ॥३॥

---

(१) मीठा बोलने वाला। (२) पान। (३) गाल पर हाथ रखना सोच का निशान है। (४) मैं। (५) भक्त, दास। (६) समय, वादा। (७) बीता। (८) दूसरे। (९) कठिन। (१०) प्रीत। (११) दुख। (१२) देर। (१३) चमेली।

॥ शब्द ३६ ॥

प्रेम नी[1] प्रेम नी प्रेम नी रे, मन लागी कटारी प्रेम नी रे ॥टेक॥
जल जमुना माँ भरवा गया ताँ, हती गागर माथे हेम नी रे[2] ॥१॥
काँचे ते ताँत ने हरिजीये बाँधी, जेम खेचे तेमनी रे[3] ॥२॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, साँवली सुरत सुभ एमनी[4] रे ॥३॥

॥ शब्द ३७ ॥

जोगी मत जा मत जा मत जा, पाय परूँ मैं चेरी तेरी हौं ॥टेक॥
प्रेम भगति को पैंड़ो[5] ही न्यारो, हम कूँ गैल[5] बता जा ॥१॥
अगर चंदन की चिता रचाऊँ, अपणे हाथ जला जा ॥२॥
जल बल भई भस्म की ढेरी, अपने अंग लगा जा ॥३॥
मीरा कहे प्रभु गिरधर नागर, जोत में जोत मिला जा ॥४॥

॥ शब्द ३८ ॥

जोगिया री सूरत मन में बसी ॥ टेक ॥
नित प्रति ध्यान धरत हूँ दिल में, निस दिन होत कुसी[6] ॥१॥
कहा करूँ कित जाउँ मोरी सजनी, मानो सरप डसी ॥२॥
मीरा कहे प्रभु कब रे मिलोगे, प्रीत रसीली बसी ॥३॥

॥ शब्द ३९ ॥

पतियाँ मैं कैसे लिखूँ, लिखिही न जाई ॥ टेक ॥
कलम भरत मेरे कर कंपत, हिरदो रहो घर्राई ॥ १ ॥
बात कहूँ मोहिं बात न आवे, नैण रहे झर्राई ॥ २ ॥
किस बिधि चरण कमल मैं गहिहों, सबहि अंग थर्राई ॥ ३ ॥
मीरा कहे प्रभु गिरधर नागर, सब ही दुख बिसराई ॥ ४ ॥

॥ शब्द ४० ॥

देखो सइयाँ हरि मन काठ कियो ॥ टेक ॥
आवन कहि गयो अजहुँ न आयो, करि करि बचन गयो ॥१॥

---

(१) की। (२) मैं सोने का घड़ा सिर पर धर कर जल भरने जमुना को गई थी। (३) हरि ने कच्चे धागे अर्थात् प्रीति की डोरी से मुझे बाँध लिया और जहाँ चाहे खींचे लिये जाते हैं। (४) ऐसी। (५) राह। (६) खुशी।

खान पान सुध बुध सब बिसरी, कैसे करि मैं जियों ॥ २ ॥
बचन तुम्हारे तुमहिं बिसारे, मन मेरो हर लियो ॥ ३ ॥
मीरा कहे प्रभु गिरधर नागर, तुम बिन फटत हियो ॥ ४ ॥

॥ शब्द ४१ ॥

मीरा मन मानी सुरत सैल असमानी ॥ टेक ॥
जब जब सुरत लगे वा घर की, पल पल नैनन पानी ॥ १ ॥
ज्यों हिये पीर तीर सम सालत, कसक कसक कसकानी ॥ २ ॥
रात दिवस मोहिं नींद न आवत, भावे अन्न न पानी ॥ ३ ॥
ऐसी पीर बिरह तन भीतर, जागत रैन बिहानी ॥ ४ ॥
ऐसा बैद मिलै कोइ भेदी, देस बिदेस पिछानी ॥ ५ ॥
तासों पीर कहूँ तन केरी, फिर नहिं भरमों खानी ॥ ६ ॥
खोजत फिरों भेद वा घर को, कोई न करत बखानी ॥ ७ ॥
रैदास संत मिले मोहिं सतगुरु, दीन्हा सुरत सहदानी ॥ ८ ॥
मैं मिली जाय पाय पिय अपना, तब मोरी पीर बुझानी ॥ ९ ॥
मीरा खाक खलक सिर डारी, मैं अपना घर जानी ॥१०॥

॥ शब्द ४२ ॥

आली रे मेरे नैनन बान पड़ी ॥ टेक ॥
चित्त चढ़ी मेरे माधुरी मूरत, उर बिच आन अड़ी ॥ १ ॥
कब की ठाढ़ी पंथ निहारूँ, अपने भवन खड़ी ॥ २ ॥
कैसे प्रान पिया बिन राखूँ, जीवन मूल जड़ी ॥ ३ ॥
मीरा गिरधर हाथ बिकानी, लोग कहै बिगड़ी ॥ ४ ॥

॥ शब्द ४३ ॥

जाओ हरि निरमोहड़ा[1] रे, जाणी थाँरी प्रीत ॥ टेक ॥
लगन लगी जब और प्रीत छी[2], अब कुछ अँवली[3] रीत ॥ १ ॥
अमृत पाय बिषै क्यूँ दीजे, कोण गाँव की रीत ॥ २ ॥
मीरा कहे प्रभु गिरधर नागर, आप गरज के मीत ॥ ३ ॥

(१) निर्मोही। (२) थी। (३) उलटी।

॥ शब्द ४४ ॥

मिलता जाज्यो हो गुर ज्ञानी, थाँरी सूरत देखि लुभानी ॥टेक॥
मेरो नाम बूझि तुम लीज्यो, मैं हूँ बिरह दिवानी ॥ १ ॥
रात दिवस कल नाहिं परत है, जैसे मीन बिन पानी ॥ २ ॥
दरस बिना मोहिं कछु न सुहावे, तलफ तलफ मर जानी ॥ ३ ॥
मीरा तो चरणन की चेरी, सुन लीजे सुखदानी ॥ ४ ॥

॥ शब्द ४५ ॥

मेरे प्रीतम प्यारे राम ने[1], लिख भेजूँ री पाती ॥ टेक ॥
स्याम सनेसो कबहुँ न दीन्हो, जान बूझ गुझ[2] बाती ॥ १ ॥
ऊँची चढ़ चढ़ पंथ निहारूँ, रोय रोय अँखियाँ राती[3] ॥ २ ॥
तुम देख्याँ बिन कल न परत है, हियो फटत मोरी छाती ॥ ३ ॥
मीरा कहे प्रभु कब रे मिलोगे, पूर्व जनम के साथी ॥ ४ ॥

॥ शब्द ४६ ॥

स्याम को सँदेसो आयो, पतियाँ लिखाय माय ॥ टेक ॥
पतियाँ अनूप आई, छतियाँ लगाय लीनी ।
अचल की दे दे ओट, ऊधो पै बँचाई[4] है ॥ १ ॥
बाल की जटा बनाऊँ, अंग तो भभूत लाऊँ ।
फाड़ूँ चीर पहरूँ कंथा[5], जोगण बण जाऊँगी ॥ २ ॥
इन्द्र के नगारे बाजे, बादल की फौज आई ।
तोपखाना पेस-खाना[6], उतरा आय बाग में ॥ ३ ॥
मथुरा उजाड़ कीन्ही, गोकुल बसाय लीन्ही ।
कुबजा सूँ बाँध्यो हेत, मीरा गाय सुनाई है ॥ ४ ॥

॥ शब्द ४७ ॥

गोबिंद कबहुँ मिले पिया मेरा ॥ टेक ॥
चरन कमल को हँस करि देखों, राखों नैनन नेरा ॥ १ ॥

(१) को । (२) गुप्त । (३) लाल । (४) पढ़वाई । (५) जोगियों के पहिनने का मेखला ।
(६) पेश खेमा ।

निरखन की मोहिं चाव घनेरी, कब देखौं मुख तेरा ॥ २ ॥
ब्याकुल प्रान धरत नहिं धीरज, मिल तूँ मीत सबेरा ॥ ३ ॥
मीरा कहे प्रभु गिरधर नागर, ताप तपन बहुतेरा ॥ ४ ॥

॥ शब्द ४८ ॥

सखी मेरी नींद नसानी हो।
पिया को पंथ निहारते, सब रैन बिहानी हो ॥ १ ॥
सखियन मिल के सीख दई, मन एक न मानी हो।
बिन देखे कल ना परे, जिय ऐसी ठानी हो ॥ २ ॥
अंग छीन ब्याकुल भई, मुख पिय पिय बानी हो।
अंतर बेदन[1] बिरह की, वह पीर न जानी हो ॥ ३ ॥
ज्यों चातक घन को रटे, मछरी जिमि पानी हो।
मीरा ब्याकुल बिरहनी, सुध बुध बिसरानी हो ॥ ४ ॥

॥ शब्द ४९ ॥

भर मारी रे बानाँ[2] मेरे सतगुरु बिरह लगाय के ॥ टेक ॥
पावन पंगा कानन बहिरा, सूझत नाहीं नैना ॥ १ ॥
खड़ी खड़ी रे पंथ निहारूँ, मरम न कोई जाना ॥ २ ॥
सतगुरु औषद ऐसी दीन्ही, रूम रूम[3] भइ चैना ॥ ३ ॥
सतगुरु जस्या[4] बैद न कोई, पूछो बेद पुराना ॥ ४ ॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, अमर लोक में रहना ॥ ५ ॥

॥ शब्द ५० ॥

वारी वारी हो राम हूँ वारी तुम आज्यो[5] गली हमारी ॥ टेक ॥
तुम देख्याँ बिन कल न पड़त है, जोऊँ बाट तुमारी ॥ १ ॥
कूण सखी सूँ तुम रँग राते, हम सूँ अधिक पियारी ॥ २ ॥
किरपा कर मोहिं दरसण दीज्यो, सब तकसीर बिसारी ॥ ३ ॥
तुम सरणागत परम दयाला, भवजल तार मुरारी ॥ ४ ॥
मीरा दासी तुम चरणन की, बार बार बलिहारी ॥ ५ ॥

(१) तकलीफ। (२) तीर। (३) रोम रोम। (४) जैसा। (५) आओ।

॥ शब्द ५१ ॥

मैं बिरहिन बैठी जागूँ, जगत सब सोवै री आली ॥ टेक ॥
बिरहिन बैठी रङ्ग महल में, मोतियन की लड़ पोवै।
इक बिरहिन हम ऐसी देखी, अँसुअन की माला पोवै ॥ १ ॥
तारा गिण गिण रैण बिहानी, सुख की घड़ी कब आवै।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, मिल के बिछुड़ न जावै ॥ २ ॥

॥ शब्द ५२ ॥

बरज मैं काहू की नाहिं रहूँ ॥ टेक ॥
सुनो री सखी तुम चेतन होइ के, मन की बात कहूँ ॥ १ ॥
साध संगति करि हरि सुख लेऊँ, जग सूँ मैं दूरि रहूँ ॥ २ ॥
तन धन मेरो सबही जावो, भल[1] मेरो सीस लहूँ[2] ॥ ३ ॥
मन मेरो लागो सुमिरन सेती, सब का मैं बोल[3] सहूँ ॥ ४ ॥
मीरा कहे प्रभु गिरधर नागर, सतगुरु सरन रहूँ ॥ ५ ॥

॥ शब्द ५३ ॥

दरस बिन दुखन लागे नैन ॥ टेक ॥
जब से तुम बिछुरे मेरे प्रभु जी, कबहुँ न पायों चैन।
सबद सुनत मेरी छतियाँ कंपै, मीठे लगे तुम बैन ॥ १ ॥
एक टकटकी पंथ निहारूँ, भई छमासी रैन ॥ २ ॥
बिरह बिथा कासूँ कहूँ सजनी, बह गइ करवत औन[4] ॥ ३ ॥
मीरा के प्रभु कब रे मिलोगे, दुख मेटन सुख देन ॥ ४ ॥

॥ शब्द ५४ ॥

बाल्हा[5] मैं बैरागिण हूँगी हो।
जीं जीं[6] भेष म्हाँरो साहिब रीझै, सोइ सोइ भेष धरूँगी हो ॥ टेक ॥
सील संतोष धरूँ घट भीतर, समता पकड़ रहूँगी हो।
जा को नाम निरञ्जण कहिये, ता को ध्यान धरूँगी हो ॥ १ ॥
गुरू ज्ञान रंगूँ तन कपड़ा, मन मुद्रा पेरूँगी[7] हो।

(१) बल्कि। (२) लेलो। (३) ताना। (४) औन = घर; अर्थात् मेरे कलेजे पर आरी चल गई। (५) प्यारे। (६) जो जो। (७) पहिरूँगी।

प्रेम प्रीत सूँ हरिगुण गाऊँ, चरणन लिपट रहूँगी हो ॥ २ ॥
या तन की मैं करूँ कींगरी[1], रसना नाम रटूँगी हो ।
मीरा कहे प्रभु गिरधर नागर, साधाँ संग रहूँगी हो ॥ ३ ॥

॥ शब्द ५५ ॥

मैं तो राजी भई मेरे मन में, मोहिं पिया मिले इक छिन में ॥ टेक ॥
पिया मिल्या मोहिं किरपा कीन्ही, दीदार दिखाया हरि ने ॥१॥
सतगुरु सबद लखाया अंस री, ध्यान लगाया धन में ॥२॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, मगन भई मेरे मन में ॥३॥

॥ शब्द ५६ ॥

मेरे गिरधर गुपाल दूसरो न कोई ॥ टेक ॥
जा के सिर मोर मुकट मेरो पति सोई ।
तात मात भ्रात बंधु अपना नहिं कोई ॥ १ ॥
छाँड़ दई कुल की कान क्या करिहै कोई ।
संतन ढिंग बैठि बैठि लोक लाज खोई ॥ २ ॥
चुनरी के किये टूक टूक ओढ़ लीन्ह लोई ।
मोती मूँगे उतार बन माला पोई ॥ ३ ॥
अँसुवन जल सींच सींच प्रेम बेल बोई ।
अब तो बेल फैल गई आनन्द फल होई ॥ ४ ॥
दूध की मथनिया बड़े प्रेम से बिलोई ।
माखन जब काढ़ि लियो छाछ पिये कोई ॥ ५ ॥
आई मैं भक्ति काज जगत देख मोही ।
दासी मीरा गिरधर प्रभु तारो अब मोही ॥ ६ ॥

॥ शब्द ५७ ॥

मेरो मन लागो हरि जी सूँ, अब न रहूँगी अटकी ॥ टेक ॥
गुरु मिलिया रैदास जी, दीन्ही ज्ञान की गुटकी[2] ।
चोट लगी निज नाम हरी की, म्हाँरे हिवड़े[3] खटकी ॥ १ ॥

---

(१) एक बाजा का नाम । (२) घूंट । (३) हृदय ।

माणिक मोती परत[1] न पहिरूँ, मैं कब की नटकी[2]।
गेणो[3] तो म्हाँरे माला दोवड़ी[4], और चंदन की कुटकी ॥ २ ॥
राज कुल की लाज गमाई, साधाँ के संग मैं भटकी।
नित उठ हरि जी के मंदिर जास्याँ, नाच्याँ देदे चुटकी ॥ ३ ॥
भाग खुल्यो म्हाँरो साध संगत सूँ, साँवरिया की बट की।
जेठ बहू की काण[5] न मानूँ, घूँघट पड़ गई पटकी[6] ॥ ४ ॥
परम गुराँ के सरन में रहस्याँ, परणाम कराँ लुटकी[7]।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, जनम मरन सूँ छुटकी ॥ ५ ॥

॥ शब्द ५८ ॥

राम मिलण रो घणो उमावो[8], नित उठ जोऊँ बाटड़ियाँ[9]।
दरसण बिन मोहि पल न सुहावै, कल न पड़त है आँखड़ियाँ ॥१॥
तलफ तलफ के बहु दिन बीते, पड़ी बिरह की फाँसड़ियाँ।
अब तो बेग दया कर साहिब, मैं हूँ तेरी दासड़ियाँ ॥२॥
नैण दुखी दरसण को तरसे, नाभि न बैठे साँसड़ियाँ।
रात दिवस यह आरत मेरे, कब हरि राखे पासड़ियाँ[10] ॥३॥
लगी लगन छूटण की नाहीं, अब क्यूँ कीजे आँटड़ियाँ[11]।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, पूरो मन की आसड़ियाँ[12] ॥४॥

॥ शब्द ५९ ॥

राणा जी हूँ अब न रहूँगी तोरी हटकी।
साध संग मोहिं प्यारा लागे, लाज गई घूँघट की ॥ १ ॥
पीहर मेढ़ता[13] छोड़ा अपना, सुरत निरत दोउ चटकी।
सतगुर मुकर दिखाया घट का, नाचूँगी देदे चुटकी ॥ २ ॥
हार सिंगार सभी ल्यो अपना, चूड़ी कर की पटकी।
मेरा सुहाग अब मोकूँ दरसा, और न जाने घट की ॥ ३ ॥

(१) कभी। (२) इनकार किया। (३) गहना। (४) दुहरी। (५) लाज। (६) छोड़ दिया। (७) लोट कर। (८) उमंग। (९) रास्ता निहारती हूँ। (१०) निकट। (११) टेढ़ापन। (१२) आशा। (१३) नाम नगर का जहाँ मायका मीराबाई का था।

महल किला राना मोहिं न चहिये, सारी रेसम पट[१] की।
हुई दिवानी मीरा डोले, केस लटा सब छिटकी ॥ ४ ॥

॥ शब्द ६० ॥

॥ चौपाई ॥

ज्यूँ अमलो के अमल अधारा। यूँ रामैया प्रान हमारा ॥
कोइ निन्दै बन्दै दुख पावै। माकूँ तो रामैयो भावै ॥

॥ पद ॥

सीसोद्यो[२] रूठ्यो तो म्हाँरो काँई करलेसी।
मैं तो गुण गोबिंद का गास्याँ हो माई ॥ १ ॥
राणो जी रूठ्यो वाँरो[३] देस रखासी।
हरि रूठ्याँ कुम्हलास्याँ हो माई ॥ २ ॥
लोक लाज की काण न मानूँ।
निरभै निसाण घुरास्याँ[४] हो माई ॥ ३ ॥
राम नाम की झाझ[५] चलास्याँ।
भवसागर तर जास्याँ हो माई ॥ ४ ॥
मीरा सरन सबल गिरधर की।
चरण कँवल लपटास्याँ हो माई ॥ ५ ॥

॥ शब्द ६१ ॥

गली तो चारो बन्द हुई, मैं हरि से मिलूँ कैसे जाय ॥टेक॥
ऊँची नीची राह रपटीली, पाँव नहीं ठहराय।
सोच सोच पग धरूँ जतन से, बार बार डिग जाय ॥ १ ॥
ऊँचा नीचा महल पिया का, हम से चढ़्या न जाय।
पिया दूर पंथ म्हाँरा झीना, सुरत झकोला खाय ॥ २ ॥
कोस कोस पर पहरा बैठ्या, पैंड पैंड[६] बटमार।
हे विधना कैसी रच दीन्ही, दूर बस्यो म्हाँरो गाम ॥ ३ ॥

(१) कपड़ा। (२) राना की जाति का नाम। (३) उसका, अपना। (४) बजाना। (५) जहाज। (६) परग परग पर।

मीरा के प्रभु गिरधर नागर, सतगुर दई बताय।
जुगन जुगन से बिछड़ी मीरा, घर में लीन्हा आय ॥ ४ ॥

॥ शब्द ६२ ॥

रमैया मैं तो थाँरे रँग राती ॥ टेक ॥
औराँ के पिय परदेस बसत हैं, लिख लिख भेजें पाती।
मेरा पिया मेरे रिदे बसत है, गूँज[1] करूँ दिन राती ॥ १ ॥
चूवा[2] चोला[3] पहिर सखीरी, मैं झुरमट रमवा[4] जाती।
झुरमट में मोहिं मोहन मिलिया, खोल मिलूँ गल बाटी[5] ॥ २ ॥
और सखी मद पी पी माती, मैं बिन पीयाँ मद माती।
प्रेम भठी को मैं मद पीयो, छकी फिरूँ दिन राती ॥ ३ ॥
सुरत निरत का दिवला सँजोया, मनसा पूरन बाती।
अगम घाणि का तेल सिंचाया, बाल रही दिन राती ॥ ४ ॥
जाऊँ नी पीहरिये जाऊँनी सासुरिये, सतगुर सैन लगाती।
दासी मीरा के प्रभु गिरधर, हरि चरनाँ की मैं दासी ॥ ५ ॥

॥ शब्द ६३ ॥

पायो जी मैंने नाम रतन धन पायो ॥ ॥ टेक ॥
बस्तु अमोलक दी मेरे सतगुर, किरपा कर अपनायो ॥ १ ॥
जनम जनम की पूँजी पाई, जग में सभी खोवायो ॥ २ ॥
खरचै नहिं कोइ चोर न लेवे, दिन दिन बढ़त सवायो ॥ ३ ॥
सत की नाव खेवटिया सतगुर, भवसागर तर आयो ॥ ४ ॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, हरख हरख जस गायो ॥ ५ ॥

॥ शब्द ६४ ॥

माई मैं तो लियो रमैयो मोल ॥ टेक ॥
कोइ कहे छानी[6] कोइ कहे चोरी, लियो है बजंता ढोल ॥१॥
कोइ कहे कारो कोइ कहे गोरो, लियो है मैं आँखी खोल ॥२॥
कोइ कहे हलका कोइ कहे भारी, लियो है तराजू तोल ॥३॥

---

(१) भेद की बात। (२) लाल। (३) वस्त्र। (४) खेलने। (५) बाँह। (६) छिपाकर।

तन का गहना मैं सब कुछ दीन्हा, दियो है बाजूबंद खोल ॥४॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, पुरब जनम का है कौल ॥५॥

॥ शब्द ६५ ॥

म्हाँरे घर आज्यो प्रीतम प्यारा, तुम बिन सब जग खारा[1] ॥ टेक ॥
तन मन धन सब भेंट करूँ, और भजन करूँ मैं थाँरा ।
तुम गुणवंत बड़े गुण सागर, मैं हूँ जी औगणहारा ॥१॥
मैं निगुणी गुण एको नाहीं, तुझ में जी गुण सारा ।
मीरा कहे प्रभु कबहि मिलोगे, बिन दरसण दुखियारा ॥२॥

॥ शब्द ६६ ॥

कोई कछू कहे मन लागा ॥ टेक ॥
ऐसी प्रीत लगी मनमोहन, ज्यूँ सोने में सुहागा ॥ १ ॥
जनम जनम का सोया मनुवाँ, सतगुर सब्द सुण जागा ॥ २ ॥
मात पिता सुत कुटुम कबीला, टूट गया ज्यूँ तागा ॥ ३ ॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, भाग हमारा जागा ॥ ४ ॥

॥ शब्द ६७ ॥

जब से मोहिं नंदनंदन दृष्टि पड़्यो माई ।
तब से परलोक लोक कछू ना सोहाई ॥ १ ॥
मोरन की चंद्र कला सीस मुकुट सोहै ।
केसर को तिलक भाल तीन लोक मोहे ॥ २ ॥
कुण्डल की अलक झलक कपोलन पर छाई ।
मनो[2] मीन सरवर तजि मकर[3] मिलन आई ॥ ३ ॥
कुटिल भृकुटि[4] तिलक भाल चितवन में टौना[5] ।
खंजन[6] अरु मधुप[7] मीन भूले मृग छौना[8] ॥ ४ ॥
सुन्दर अति नासिका सुग्रीव[9] तीन रेखा ।
नटवर[10] प्रभु भेष धरे रूप अति बिसेषा ॥ ५ ॥

---

(१) बाड़ा के किनारे हिफाजत के लिये काँटे लगा देते हैं। (२) मानो, गोया। (३) मगर। (४) भौं। (५ जादू। (६) खेड़रिच चिड़िया। (७) भौंरा। (८) बच्चा। (९) गला। (१०) नट के समान काछनी काछे।

अधर बिंब अरुन नैन मधुर मन्द हाँसी।
दसन[1] दमक दाड़िम[2] दुति[3] चमके चपला[4] सी ॥ ६ ॥
छुद्र घंट किंकिनी[5] अनूप धुनि सोहाई।
गिरधर अंग अंग मीरा बलि जाई ॥ ७ ॥

॥ शब्द ६८ ॥

नैनन बनज बसाऊँ री, जो मैं साहिब पाऊँ[6] ॥ टेक ॥
इन नैनन मेरा साहिब बसता, डरती पलक न नाऊँ री ॥१॥
त्रिकुटी महल में बना है झरोखा, तहाँ से झाँकी लगाऊँ री ॥२॥
सुन्न महल में सुरत जमाऊँ, सुख की सेज बिछाऊँ री ॥३॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, बार बार बल जाऊँ री ॥४॥

॥ शब्द ६९ ॥

होता जाजो राज हमारे महलों, होता जाजो राज ॥ टेक ॥
मैं औगुनी मेरा साहिब सगुना, संत संवारैं काज ॥ १ ॥
मीरा के प्रभु मन्दिर पधारो, करके केसरिया साज ॥ २ ॥

॥ शब्द ७० ॥

चलाँ वाही देस प्रीतम पावाँ, चलाँ वाही देस ॥ टेक ॥
कहो कुसुम्बी सारी रँगावाँ, कहो तो भगवा भेस ॥ १ ॥
कहो तो मोतियन माँग भरावाँ, कहो छिटकावाँ केस ॥ २ ॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, सुनियो बिरद के नरेस ॥ ३ ॥

॥ शब्द ७१ ॥

न भावे थारो देसड़ लो जी, रूड़ो रूड़ो[7] ॥ टेक ॥
हरि की भगति करे नहिं कोई, लोग बसें सब कूड़ो ॥ १ ॥
माँग और पाटी उतार धरूँगी, ना पहिरूँ कर चूड़ो ॥ २ ॥
मीरा हठीली कहे संतन से, बर पायो छे पूरो ॥ ३ ॥

(१) दाँत। (२) अनार। (३) प्रकाश। (४) बिजली। (५) छोटी छोटी घंटियाँ जो करधनी में पोह देते हैं। (६) जो मुझे साहिब मिल जायँ तो अपनी आँखों को जो बनजारे की तरह चारों ओर फिरती हैं बसा या ठहरा रक्खूँ। (७) बुरा।

॥ शब्द ७२ ॥

हेली सुरत सोहागिन नार, सुरत मेरी राम से लगी ॥ टेक ॥
लगनी लहँगा पहिर सोहागिन, बीती जाय बहार ।
धन जोबन दिन चार का है, जात न लागे बार ॥ १ ॥
झूठे बर को क्या बरूँ जी, अधबिच में तज जाय ।
बर बराँ ला राम जी, म्हारो चूड़ो अमर हो जाय ॥ २ ॥
राम नाम का चूड़लो हो, निरगुन सुरमो सार ।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, हरि चरणाँ की मैं दास ॥ ३ ॥

॥ शब्द ७३ ॥

रघुनन्दन आगे नाचूँगी ॥ टेक ॥
नाच नाच रघुनाथ रिझाऊँ, प्रेमी जन को जाचूँगी ॥ १ ॥
प्रेम प्रीत का बाँध घँघूरा, सुरत की कछनी काछूँगी ॥ २ ॥
लोक लाज कुल की मरजादा, या में एक न राखूँगी ॥ ३ ॥
पिया के पलँगा जा पोढ़ूँगी, मीरा हरि रंग राचूँगी ॥ ४ ॥

बिनती और प्रार्थना का अङ्ग

॥ शब्द १ ॥

अब तो निभायाँ बनेगा, बाँह गहे की लाज ॥ टेक ॥
समरथ सरण तुम्हारी साँइयाँ, सरब सुधारण काज ॥ १ ॥
भवसागर संसार अपरबल, जा में तुम हो जहाज ॥ २ ॥
निरधाराँ आधार जगत-गुर, तुम बिन होय अकाज ॥ ३ ॥
जुग जुग भीर[1] करी भक्तन की, दीन्ही मोच्छ समाज ॥ ४ ॥
मीरा सरण गही चरणन की, पेज[2] रखो महराज ॥ ५ ॥

॥ शब्द २ ॥

कोई दिन याद करोगे रमता राम अतीत[3] ॥ टेक ॥
आसण माँड़ अडिग होय बैठा, याही भजन की रीत ॥ १ ॥
मैं तो जाणूँ जोगी संग चलेगा, छाँड़ गयो अधबीच ॥ २ ॥

(१) सहायता । (२) लाज । (३) निर्माया ।

आत न दीसे जात न दीसे, जोगी किस का मीत ॥ ३ ॥
मीरा कहै प्रभु गिरधर नागर, चरणन आवे चीत ॥ ४ ॥

॥ शब्द ३ ॥

हो जी म्हाराज छोड़ मत जाज्यो ॥ टेक ॥
मैं अबला बल नाहिं गोसाईं, तुमहिं मेरे सिरताज ॥ १ ॥
मैं गुणहीन गुण नाहिं गुसाईं, तुम समरथ महराज ॥ २ ॥
रावली[1] होइ ये किन रे जाऊँ, तुम हो हिवड़ा रो साज[2] ॥ ३ ॥
मीरा के प्रभु और न कोई, राखो अब के लाज ॥ ४ ॥

॥ शब्द ४ ॥

तुम आज्यो जी रामा, आवत आस्याँ सामा[3] ॥ टेक ॥
तुम मिलियाँ मैं बहु सुख पाऊँ, सरैं मनोरथ कामा ॥ १ ॥
तुम बिच हम बिच अंतर नाहीं, जैसे सूरज घामा ॥ २ ॥
मीरा के मन और न माने, चाहे सुन्दर स्यामा ॥ ३ ॥

॥ शब्द ५ ॥

अब मैं सरण तिहारी जी, मोहिं राखो कृपानिधान ॥टेक॥
अजामील अपराधी तारे, तारे नीच सदान[4] ।
जल डूबत गजराज उबारे, गणिका चढ़ी बिमान ॥ १ ॥
और अधम तारे बहुतेरे, भाखत संत सुजान ।
कुबजा नीच भीलनी तारी, जानै सकल जहान ॥ २ ॥
कहँ लगि कहूँ गिनत नहिं आवे, थकि रहे बेद पुरान ।
मीरा कहै मैं सरण रावली, सुनियो दोनों कान ॥ ३ ॥

॥ शब्द ६ ॥

मेरा बेड़ा लगाय दीजो पार, प्रभु जी अरज करूँ छूँ ॥ टेक ॥
या भव में मैं बहु दुख पायो, संसा सोग निवार ॥ १ ॥
अष्ट करम की तलब लगी है, दूर करो दुख पार ॥ २ ॥
यो संसार सब बह्यो जात है, लख चौरासी धार ॥ ३ ॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, आवागवन निवार ॥ ४ ॥

---

(१) आप की । (२) हिये का भूषण । (३, साँझ । (४) सदन कसाई ।

॥ शब्द ७ ॥

रावलो[1] बिड़द[2] मोहिं रूदो[3] लागे, पीड़ित पराये प्राण[4] ॥ १ ॥
सगो[5] सनेही मेरो और न कोई, बैरी सकल जहान ॥ २ ॥
ग्राह गह्यो गजराज उबारयो, बूड़ न दियो छे जान ॥ ३ ॥
मीरा दासी अरज करत है, नहिं जी सहारो आन[6] ॥ ४ ॥

॥ शब्द ८ ॥

म्हाँरो जनम मरन को साथी, थाँ ने नहिं बिसरूँ दिन राती ॥टेक॥
तुम देख्याँ बिन कल न पड़त है, जानत मेरी छाती।
ऊँची चढ़ चढ़ पंथ निहारूँ, रोय रोय अँखियाँ राती[7] ॥ १ ॥
यो संसार सकल जग झूँठो, झूँठा कुल रा नाती।
दोउ कर जोड़्याँ अरज करत हूँ, सुण लीज्यो मेरी बाती ॥ २ ॥
यो मन मेरो बड़ो हरामी, ज्यूँ मद मातो हाथी।
सतगुरु दस्त[8] धरयो सिर ऊपर, आँकुस दे समझाती ॥ ३ ॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, हरि चरणाँ चित राती[9]।
पल पल तेरा रूप निहारूँ, निरख निरख सुख पाती ॥ ४ ॥

॥ शब्द ९ ॥

पिया म्हाँरे नैणा आगे रहज्यो जी ॥ टेक ॥
नैणा आगे रहज्यो, म्हाँने भूल मत जाज्यो जी ॥ १ ॥
भौ सागर में बही जात हूँ, बेग म्हाँरी सुध लीज्यो जी ॥ २ ॥
राणा जी भेजा बिष का प्याला, सो अमृत कर दीज्यो जी ॥ ३ ॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, मिल बिछुरन मत कीज्यो जी ॥ ४ ॥

॥ शब्द १० ॥

स्वामी सब संसार के हो, साँचे श्रीभगवान ॥ टेक ॥
स्थावर जंगम पावक पाणी, धरती बीच समान।
सब में महिमा तेरी देखी, कुदरत के कुरबान ॥ १ ॥

---

(१) आप का। (२) प्रण (पतित-पावन का)। (३) अच्छा (४) भक्त के दुख में आप दुखी होते हो। (५) सम्बन्धी। (६) दूसरा। (७) लाल। (८) हाथ। (९) रत।

सूदामा के दारिद खोये, बारे की पहिचान[1]।
दो मुट्ठी तंदुल की चाबी, दीन्हो द्रव्य महान[1] ॥ २ ॥
भारत में अर्जुन के आगे, आप भये रथवान।
उन ने अपने कुल को देखा, छुट गये तीर कमान ॥ ३ ॥
ना कोइ मारे ना कोइ मरता, तेरा यह अज्ञान।
चेतन जीव तो अजर अमर है, यह गीता को ज्ञान ॥ ४ ॥
मुझ पर तो प्रभु किरपा कीजे, बंदी अपनी जान।
मीरा गिरधर सरण तिहारी, लगै चरण में ध्यान ॥ ५ ॥

॥ शब्द ११ ॥

मीरा को प्रभु साची दासी बनाओ।
झूठे धंधों से मेरा फंदा छुड़ाओ ॥ टेक ॥
लूटे ही लेत बिबेक का डेरा, बुधि बल यदपि करूँ बहुतेरा ॥१॥
हाय राम नहिं कछु बस मेरा, मरत हूँ बिबस प्रभु धाओ सबेरा ॥२॥
धर्म उपदेस नित प्रति सुनती हूँ, मन कुचाल से भी डरती हूँ ॥३॥
सदा साधु सेवा करती हूँ, सुमिरण ध्यान में चित धरती हूँ ॥४॥
भक्ति मार्ग दासी को दिखाओ, मीरा को प्रभु साची दासी बनाओ॥५॥

॥ शब्द १२ ॥

म्हाँरी सुध ज्यूँ जानो ज्यूँ लीजो जी ॥ टेक ॥
पल पल भीतर पंथ निहारूँ, दरसण म्हाँने दीजो जी ॥१॥
मैं तो हूँ बहु औगणहारी, औगण चित मत दीजो जी ॥२॥
मैं तो दासी थाँरे चरण जनाँ की, मिल बिछुरन मत कीजो जी ॥३॥
मीरा तो सतगुर जी सरणे, हरि चरणाँ चित दीजो जी ॥४॥

॥ शब्द १३ ॥

म्हाँरे नैणा आगे रहीजो जी, स्याम गोविन्द ॥ टेक ॥
दास कबीर घर बालद[2] जो लाया, नामदेव का छान छवंद ॥१॥

(१) श्री कृष्ण और सुदामा जी लड़कपन में एक ही पंडित से पढ़ते थे। सुदामा जी के थोड़े से चावल की भेंट पर श्रीकृष्ण ने उन्हें भारी धनी बना दिया। (२) बैल।

दास धना को खेत निपजाथो, गज की टेर सुनंद ॥ २ ॥
भीलणी का बेर सुदामा का तन्दुल, भर मूठड़ी[1] बुकंद[2] ॥ ३ ॥
करमा बाई को खींच[3] अरोग्यो, होइ परसण पावंद[2] ॥ ४ ॥
सहस गोप बिच स्याम बिराजे, ज्यों तारा बिच चंद ॥ ५ ॥
सब संतों का काज सुधारा, मीरा सूँ दूर रहंद ॥ ६ ॥

॥ शब्द १४ ॥

तुम पलक उघाड़ो दीनानाथ, हूँ हाजिर नाजिर कब की खड़ी ॥टेक॥
साऊ[4] थे दुसमण होइ लागे, सब ने लगूँ कड़ी[5] ।
तुम बिन साऊ कोऊ नहीं है, डिगी[6] नाव मेरी समँद अड़ी ॥ १ ॥
दिन नहिं चैन रात नहिं निदरा, सूखूँ खड़ी खड़ी ।
बान बिरह के लगे हिये में, भूलूँ न एक घड़ी ॥ २ ॥
पत्थर की तो अहिल्या तारी, बन के बीच पड़ी ।
कहा बोझ मीरा में कहिये, सौ ऊपर एक धड़ी[7] ॥ ३ ॥
गुरु रैदास मिले मोहिं पूरे, धुर से कलम भिड़ी ।
सतगुरु सैन दई जब आ के, जोत में जोत रली ॥ ४ ॥

॥ शब्द १५ ॥

तुम सुनो दयाल म्हाँरी अरजी ॥ टेक ॥
भौसागर में बही जात हूँ, काढ़ो तो थाँरी मरजी ॥ १ ॥
यो संसार सगो नहिं कोई, साचा सगा रघुबर जी ॥ २ ॥
मात पिता और कुटँब कबीलो, सब मतलब के गरजी ॥ ३ ॥
मीरा को प्रभु अरजी सुन लो, चरन लगाओ थाँरी मरजी ॥ ४ ॥

---

(१) मुट्ठी । (२) खाया । (३) बजरी की खिचड़ी । (४) रक्षक । (५ कड़वी ।
(६) झकोला खाती है । (७) पसेरी ।

मीराबाई और कुटुम्बियों की कहा-सुनी

॥ शब्द १ ॥

म्हाँना गुरु गोबिंद री आण[1], गोरल[2] ना पूजाँ ॥ टेक ॥
[सास]–ओरज[3] पूजै गोरज्या[2] जी, थे क्यूँ पूजो न गोर ।
मन बंछत फल पावस्थो जीं, थे क्यूँ पूजो ओर ॥ १ ॥
[मीरा]–नहिं हम पूजाँ गोरज्या जी, नहि पूजाँ अनदेव ।
परम सनेही गोबिंदो, थे काँइ जानो म्हाँरो भेव ॥ २ ॥
[सास]–चाल सनेही गोबिंदो, साध संताँ को काम ।
थे बेटी राठोड़ की, थाँ ने राज दियो भगवान ॥ ३ ॥
[मीरा]–राज करै ज्यानाँ करणे दीज्यो, मैं भगताँ री दास ।
सेवा साधू जनन की, म्हाँरे राम मिलन की आस ॥ ४ ॥
[सास]–लाजै पीहर[4] सासरो[5], माइतणो मोसाल[6] ।
सबही लाजै मेड़तिया[7] जीं, थाँसूँ[8] बुरा कहै संसार ॥ ५ ॥
[मीरा]–चोरी कराँ न मारगी[9], नहिं मैं करूँ अकाज ।
पुन्न के मारग चालताँ, झक मारो संसार ॥ ६ ॥
नहिं मैं पीहर सासरे, नहीं पिया जी री साथ ।
मीरा ने गोबिंद मिल्या जी, गुरु मिलिया रैदास ॥ ७ ॥

॥ शब्द २ ॥

[ऊदा]–भाभी मीरा कुल ने लगाई गाल[10],
ईडर गढ़ का आया जी ओलंबा[11] ।
[मीरा]–बाई ऊदा[12] थाँरे म्हाँरे नातो नाहिं,
बासो बस्याँ का आया जी ओलंबा[13] ॥ १ ॥

---

(१) मरजाद, शान, क़सम । (२) गनगौर । (३) दूसरे लोग । (४) बाप का घर । (५) ससुराल । (६) ननिहाल । (७) बाप के भाई-बन्द मेड़तिया । (८) तुझे । (९) जारी, ज़िना । (१०) कलंक । (११) उलहना, शिकायत । (१२) मीराबाई की ननंद का नाम । (१३) तुम्हारे घर आकर रही इसी से उलहना मिला ।

ऊदा—भाभी मीरा का साधाँ का संग निवार,
सारो सहर थाँरी निंदा करै।
मीरा—बाई ऊदा करे तो पड़्या झख मारो,
मन लागो रमता राम सूँ ॥ २ ॥
ऊदा—भाभी मीरा पहरोनी मोत्याँ को हार,
गहणो पहरो रतन जड़ाव को।
मीरा—बाई ऊदा छोड़्यो मैं मोत्याँ को हार,
गहणो तो पहर्यो सील संतोष को ॥ ३ ॥
ऊदा—भाभी मीरा औराँ के आवेजी आछी रूढ़ी जान[1],
थाँरे आवे छै हरिजन पावणा[2]।
मीरा—बाई ऊदा चढ़ चौबाराँ झाँक,
साधाँ की मंडली लागे सुहावणी ॥ ४ ॥
ऊदा—भाभी मीरा लाजे लाजे गढ़ चीतोड़,
राणोजी लाजे गढ़ रा राजवी।
मीरा—बाई ऊदा तार्यो तार्यो गढ़ चीतौड़,
राणाजी तार्या गढ़ का राजवी ॥ ५ ॥
ऊदा—भाभी मीरा लाजे लाजे थाँरा मायन बाप,
पीहर लाजे जी थाँरो मेड़तो।
मीरा—बाई ऊदा तार्या मैं तो मायन बाप,
पीहर तार्यो जी मेड़तो ॥ ६ ॥
ऊदा—भाभी मीरा राणा जी कियो छै थाँ पर कोप,
रतन कचोले[3] बिष घोलियो।
मीरा—बाई ऊदा घोल्यो तो घोलण दो,
कर चरणामृत वाही मैं पीवस्याँ ॥ ७ ॥

---

(१) बारात। (२) पाहुन। (३) कटोरा।

ऊदा—भाभी मीरा देखतड़ाँ ही मर जाय,
यो बिष कहिये बासक नाग को।
मीरा—बाई ऊदा नहीं म्हाँरे मायन बाप,
अमर डाली धरती झेलिया ॥ ८ ॥
ऊदा—भाभी मीरा राणा जी ऊभा छे[१] थाँरे द्वार,
पोथी माँगे छे थाँरा ज्ञान की।
मीरा—बाई ऊदा पोथी म्हाँरी खाँड़ा की धार,
ज्ञान निभावण राणो है नहीं ॥ ९ ॥
ऊदा—भाभी मीरा राणाजी रो बचन न लोप[२]।
उन रूठ्याँ भोड़ी[३] कोउ नहीं।
मीरा—बाई ऊदा रमापति[४] आवे म्हाँरी भीड़[३],
अरज करूँ छूँ ता सूँ बीनती ॥१०॥

॥ शब्द ३ ॥

अब मीरा मान लीज्यो म्हाँरी,
हाँजी थाँने[५] सइयाँ[६] बरजे सारी ॥ टेक ॥
राजा बरजै राणी बरजै, बरजै सब परिवारी।
कुँवर पाटवी[७] सो भी बरजै, और सेहल्या[८] सारी ॥ १ ॥
सीस फूल सिर ऊपर सोवे[९], बिंदली[१०] सोभा भारी।
गले गुजारी[११] कर में कंकण, नेवर पहिरे भारी ॥ २ ॥
साधुन के ढिंग बैठ बैठ के, लाज गमाई सारी।
नित प्रति उठि नीच घर जावो, कुल कूँ लगाओ गारी ॥ ३ ॥
बड़ा घराँ का छोरु[१२] कहावो, नाचो दे दे तारी।
वर पायो हिंदुवाणी सूरज, अब दिल में कहा धारी ॥ ४ ॥

---

(१) खड़ा है। (२) इनकार मत करो। (३) सहायक। (४) ईश्वर। (५) तुमको। (६) सखियाँ। (७) सबसे बड़ा लड़का। (८) सहेलियाँ। (९) सोहे। (१०) एक गहना जो औरतें सिर पर पहनती हैं। (११) गुलूबन्द। (१२) लड़की।

तारचों पीहर सासरो तारयो, माय मोसाली[1] तारी।
मीरा ने सतगुरु जी मिलिया, चरण कमल बलिहारी ॥ ५ ॥

॥ शब्द ४ ॥

अब नहिं मानूँ राणा थाँरी, मैं बर पायो गिरधारी ॥ टेक ॥
मनि कपूर की एक गति है, कोऊ कहो हजारी।
कंकर कंचन एक गति है, गुञ्ज[2] मिरच इकसारी ॥ १ ॥
अनड़ धणी को सरणो लीनो, हाथ सुमिरनी धारी।
जोग लियो जब क्या दिलगीरी, गुरु पाया निज भारी ॥ २ ॥
साधू संगत महँ दिल राजी, भई कुटुँब सूँ न्यारी।
छोड़ बार समझावो मोकूँ, चालूँगी बुद्ध हमारी ॥ ३ ॥
रतन जड़ित की टोपा सिर पै, हार कंठ को भारी।
चरण घूँघरू घमस[3] पड़त है, म्हें कराँ[4] स्याम सूँ यारी ॥ ४ ॥
लाज सरम सबही मैं डारी, यों तन चरण अधारी।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, झक मारो संसारी ॥ ५ ॥

॥ शब्द ५ ॥

म्हाँरे सिर पर सालिगराम, राणाजी म्हारो काईं करसी ॥ टेक ॥
मीरा सूँ राणा ने कही रे, सुण मीरा मोरी बात।
साधों की संगत छोड़ दे रे, सखियाँ सब सकुचात ॥ १ ॥
मीरा ने सुन यों कही रे, सुन राणा जी बात।
साध तो भाई बाप हमारे, सखियाँ क्यूँ घबरात ॥ २ ॥
जहर का प्याला भेजिया रे, दीजो मीरा हाथ।
अमृत करके पी गई रे, भली करें दीनानाथ ॥ ३ ॥
मीरा प्याला पी लिया रे, बोली दोउ कर जोर।
तैं तो मारण की करी रे, मेरो राखणहारो ओर ॥ ४ ॥
आधे जोहड़[5] कीच है रे, आधे जोहड़ हौज।

(१) नाना का घर। (२) घुँघची। (३) जोर से, झनकार के साथ। (४) मैंने किया। (५) बड़ा तालाब या झील।

आधे मीरा एकली रे, आधे राणा की फौज ॥ ५ ॥
काम क्रोध को डाल के रे, सील लिये हथियार ।
जीती मीरा एकली रे, हारी राणा की धार[१] ॥ ६ ॥
काचगिरी[२] का चौतरा रे, बैठे साध पचास ।
जिन में मीरा ऐसी दमके, लख तारों में परकास ॥ ७ ॥
टाँडा जब वे लादिया रे, बेगी दीन्हा जाण ।
कुल की तारण अस्तरी[३] रे, चली है पुस्कर न्हाण ॥ ८ ॥

॥ शब्द ६ ॥

ऊदाबाई—थाँने बरज बरज मैं हारी, भाभी मानो बात हमारी ॥टेक॥
राणे रोस कियो थाँ ऊपर, साधों में मत जा री ।
कुल को दाग लगै छै भाभी, निंदा हो रही भारी ॥ १ ॥
साधों रे संग बन बन भटको, लाज गुमाई सारी ।
बड़ा घरा थें जनम लियो छै, नाचो दे दे तारी ॥ २ ॥
बर पायो हिंदुवाणे सूरज, थें काईं मन धारी ।
मीरा गिरधर साध संग तज, चलो हमारे लारी ॥ ३ ॥
मीराबाई-मीरा बात नहीं जग छानी[४], ऊदाबाई समझो सुघर सयानी ४
साधू मात पिता कुल मेरे, सजन सनेही ज्ञानी ।
संत चरन की सरन रैन दिन, सत्त कहत हूँ बानी ॥ ५ ॥
राणा ने समझावो जावो, मैं तो बात न मानो ।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, संताँ हाथ बिकानी ॥ ६ ॥
ऊदाबाई—भाभी बोलो बचन बिचारी ।
साधों की संगत दुख भारी, मानो बात हमारी ॥ ७ ॥
छापा तिलक गल हार उतारो, पहिरो हार हजारी ।
रतन जड़ित पहिरो आभूषण, भोगो भोग अपारी ।
मीरा जी थें चलो महल में, थाँने सोगन[५] म्हारी ॥ ८ ॥

(१) फौज । (२) बिल्लौर । (३) स्त्री । (४) छिपी । (५) क़सम ।

मीराबाई—भाव भगत भूषण सजे, सील संतोष सिंगार।
ओढ़ी चूनर प्रेम की, गिरधर जी भरतार ॥ ९ ॥
ऊदाबाई मन समझ, जावो अपने धाम।
राज पाट भोगो तुम्हीं, हमें न तासूँ काम ॥१०॥

राग होली

॥ शब्द १ ॥

फागुन के दिन चार रे, होली खेल मना रे ॥ टेक ॥
बिन करताल पखावज बाजे, अनहद की झनकार रे ॥ १ ॥
बिन सुर राग छतीसूँ गावे, रोम रोम रँग सार रे ॥ २ ॥
सील संतोष की केसर घोली, प्रेम प्रीत पिचकार रे ॥ ३ ॥
उड़त गुलाल लाल भये बादल, बरसत रंग अपार रे ॥ ४ ॥
घट के पट सब खोल दिये हैं, लोक लाज सब डार रे ॥ ५ ॥
होली खेल प्यारी पिय घर आये, सोइ प्यारी पिय प्यार रे ॥ ६ ॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, चरन कँवल बलिहार रे ॥ ७ ॥

॥ शब्द २ ॥

होली पिया बिन लागै खारी, सुनो री सखी मेरी प्यारी ॥टेक॥
सूनो गाँव देस सब सूनो, सूनी सेज अटारी।
सूनी बिरहन पिव बिन डोले, तज दइ पीव पियारी।
भई हूँ या दुख कारी ॥ १ ॥
देस बिदेस सँदेस न पहुँचै, होय अँदेसा भारी।
गिणताँ गिणताँ घस गइँ रेखा, आँगरियाँ की सारी।
अजहुँ नहिं आये मुरारी ॥ २ ॥
बाजत झाँज मृदंग मुरलिया, बाज रही इकतारी।
आई बसंत कंथ घर नाहीं, तन में जर भया भारी।
स्याम मन कहा बिचारी ॥ ३ ॥

अब तो मेहर करो मुझ ऊपर, चित दे सुणो हमारी ।
मीरा के प्रभु मिलज्यो माधो, जनम जनम की कँवारी[1] ।
लगी दरसन की तारी ॥ ४ ॥

॥ शब्द ३ ॥

इक अरज सुनो पिय मोरी, मैं किण सँग खेलूँ होरी ॥ टेक ॥
तुम तो जाय बिदेसाँ छाये, हम से रहे चित चोरी ।
तन आभूषण छोड़े सबही, तज दिये पाट पटो री ।
मिलन की लग रही डोरी ॥ १ ॥
आप मिल्याँ बिन कल न पड़त है, त्यागे तलक[2] तमोला[3] ।
मीरा के प्रभु मिलज्यो माधो, सुणज्यो अरजी मोरी ।
रस बिन बिरहन दोरी[4] ॥ २ ॥

॥ शब्द ४ ॥

होली पिया बिन मोहिं न भावे, घर आँगण न सुहावे ॥ टेक ॥
दीपक जोय कहा करूँ हेली, पिय परदेस रहावे ।
सूनी सेज जहर ज्यूँ लागे, सुसक सुसक जिय जावे ।
नींद नैन नहिं आवे ॥ १ ॥
कब की ठाढ़ी मैं मग जोऊँ, निस दिन बिरह सतावे ।
कहा कहूँ कछु कहत न आवे, हिवड़ो अति अकुलावे ।
पिया कब दरस दिखावे ॥ २ ॥
ऐसा है कोइ परम सनेही, तुरत सँदेसो लावे ।
वा बिरियाँ कब होसी मोकूँ, हँस कर निकट बुलावे ।
मीरा मिल होली गावे ॥ ३ ॥

॥ शब्द ५ ॥

रमैया बिन नींद न आवे ।
नींद न आवे बिरह सतावे, प्रेम की आँच ढुलावे[5] ॥ टेक ॥
बिन पिया जोत मंदिर अँधियारो, दीपक दाय[6] न आवे ।

(१) क्वारी । (२) तिलक । (३) पान । (४) दुखी । (५) सुलगाना । (६) पसंद ।

पिया बिन मेरी सेज अलूनी[1], जगत रैण बिहावे[2]।
पिया कब रे घर आवे ॥ १ ॥
दादुर मोर पपिहरा बोलै, कोयल सबद सुणावे।
घुमँड घटा ऊलर[3] होइ आई दामिन दमक डरावे।
नैन झर लावे ॥ २ ॥
कहा करूँ कित जाऊँ मोरी सजनी, बेदन कूण बुतावे[4]।
बिरह नागण मोरी काया डसी है, लहर लहर जिव जावे।
जड़ी घस लावे ॥ ३ ॥
को है सखी सहेली सजनी, पिया कूँ आन मिलावे।
मीरा कूँ प्रभु कब रे मिलोगे, मन मोहन मोहिं भावे।
कबै हँस कर बतलावै[5] ॥ ४ ॥

॥ शब्द ६ ॥

रँग भरी रँग भरी रँग सूँ भरी री, होली आई प्यारी रँग सूँ भरी री ।१।
उड़त गुलाल लाल भये बादल, पिचकारिन की लगी झरी री ॥२॥
चोवा चंदन और अरगजा, केसर गागर[6] भरी धरी री ॥३॥
मीरा कहे प्रभु गिरधर नागर, चेरी होय पायन में परी री ॥४॥

॥ शब्द ७ ॥

किण सँग खेलूँ होली, पिया तज गये हैं अकेली ॥ टेक ॥
माणिक मोती सब हम छोड़े, गल में पहनी सेली।
भोजन भवन भलो नहिं लागै, पिया कारण भई गेली[7]।
मुझे दूरी क्यूँ म्हेली[8] ॥ १ ॥
अब तुम प्रीत और से जोड़ी, हम से करी क्यूँ पहिली।
बहु दिन बीते अजहुँ नहिं आये, लग रही तालाबेली[9]।
किण बिलमाये हेली ॥ २ ॥

(१) फीकी। (२) बीते। (३) चढ़ना। (४) बुझावे, शांत करे। (५) बोले। (६) घड़ा।
(७) बावली। (८) रक्खी। (९) बेकली।

स्याम बिना जिवड़ो मुरझावे, जैसे जल बिन बेलो[1]।
मीरा कूँ प्रभु दरसन दीज्यो, जनम जनम की चेली।
दरसन बिन खड़ी दुहेली[2] ॥ ३ ॥

॥ शब्द ८ ॥

हरि सों बिनती करों कर जोरी ॥ टेक ॥
बरबस रचल धमारी, हम घर मातु पिता पारैं गारी ॥१॥
निपट अलप बुधि दीन गति थोरी, प्रेम नगन रस ले बरजोरी ॥२॥
मीरा के प्रभु सरण तिहारी, अवचक आय मिलहु गिरधारी ॥३॥

राग सावन

॥ शब्द १ ॥

मतवारो बादल आयो रे, हरि के सँदेसो कुछ नहिं लायो रे ॥टेक॥
दादुर मोर पपीहा बोले, कोयल सब्द सुनायो रे।
कारी अँधियारी बिजली चमके, बिरहन अति डरपायो रे ॥१॥
गाजे बाजे पवन मधुरिया, मेहा अति झड़ लायो रे।
फूँके[3] काली नाग बिरह की जारी, मीरा मन हरि भायो रे ॥२॥

॥ शब्द २ ॥

बादल देख झरी[4] हो, स्याम मैं बादल देख झरी ॥ टेक ॥
काली पीली घटा उमँगी, बरस्यो एक धरी[5] ॥ १ ॥
जित जाऊँ तित पानिहि पानी, हुई सब भोम[6] हरी ॥ २ ॥
जा का पिव परदेस बसत है, भीजै बार[7] खरी[8] ॥ ३ ॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, कीज्यो प्रीत खरी[9] ॥ ४ ॥

॥ शब्द ३ ॥

सुनी मैं हरि आवन की आवाज ॥ टेक ॥
महल चढ़ि चढ़ि जोऊँ[10] मोरी सजनी, कब आवे म्हाराज ॥ १ ॥

---

(१) लता, बेल। (२) दुखी। (३) साँप फुफकार मारता है। (४) आँसू की धारा चली। (५) एक धार होकर। (६) जमीन। (७) बाहर। (८) खड़ी। (९) खालिस। (१०) निहारूँ।

दादुर मोर पपीहा बोलै, कोइल मधुरे साज ॥ २ ॥
उमग्यो इन्द्र चहूँ दिस बरसे, दामिन छोड़ी लाज ॥ ३ ॥
धरती रूप नवा नवा धरिया, इंद्र मिलन के काज ॥ ४ ॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, बेग मिलो म्हाराज ॥ ५ ॥

॥ शब्द ४ ॥

सावण दे रह्यो जोरा रे, घर आओ जी स्याम मोरा रे ॥टेक॥
उमड़ घुमड़ चहुँ दिस से आया, गरजत है घन घोरा रे ॥ १ ॥
दादुर मोर पपीहा बोले, कोयल कर रही सोरा रे ॥ २ ॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, ज्यो[1] वारूँ सोही थोरा रे ॥ ३ ॥

॥ शब्द ५ ॥

देखी बरषा की सरसाई[2] , मोरे पिया जी की मन में आई ॥टेक॥
नन्ही नन्ही बूँदन बरसन लाग्यो, दामिन दमके झर लाई ॥ १ ॥
स्याम घटा उमड़ी चहुँ दिस से, बोलत मोर सुहाई ॥ २ ॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, आनद मंगल गाई ॥ ३ ॥

॥ शब्द ६ ॥

नन्द नँदन बिलमाई, बदरा ने घेरी माई ॥ टेक ॥
इत घन लरजे उत घन गरजे, चमकत बिज्जु सवाई ॥ १ ॥
उमड़ घुमड़ चहुँ दिस से आया, पवन चले परवाई[3] ॥ २ ॥
दादुर मोर पपीहा बोले, कोयल सब्द सुनाई ॥ ३ ॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, चरन कमल चित लाई ॥ ४ ॥

॥ शब्द ७ ॥

बरसे बदरिया सावन की, सावन की मन भावन की ॥ टेक ॥
सावन में उमग्यो मेरो मनवा, भनक सुनी हरि आवन की ॥१॥
उमड़ घुमड़ चहुँ दिस से आयो, दामिन दमके झर लावन की ॥२॥
नन्ही नन्ही बूँदन मेहा बरसे, सीतल पवन सोहावन की ॥३॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, आनन्द मंगल गावन की ॥४॥

(१) जो। (२) बहार। (३) पुरवाई।

॥ शब्द ८ ॥

भींजे म्हाँरो दाँवन चीर, सावणियो लूम रह्यो रे[1] ॥ टेक ॥
आप तो जाय बिदेसाँ छाये, जिवड़ो धरत न धीर ॥ १ ॥
लिख लिख पतियाँ सँदेसा भेजूँ, कब घर आवै म्हाँरो पीव ॥ २ ॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, दरसन दोने[2] बलबीर[3] ॥ ३ ॥

॥ शब्द ९ ॥

मेहा बरसबो करेरे, आज तो रमियो मेरे घरे रे ॥टेक॥
नान्ही नान्ही बूंद मेघ घन बरसे, सूखे सरवर भरे रे ॥ १ ॥
बहुत दिनाँ पै प्रीतम पायो, बिछुरन को मोहिं डर से ॥ २ ॥
मीरा कहे अति नेह जुड़ायो[4], मैं लियो पुरबलो[5] बर[6] रे ॥ ३ ॥

॥ शब्द १० ॥

रे पपइया प्यारे कब कौ बैर चितारो[7] ॥ टेक ॥
मैं सूती छी[8] अपने भवन में, पिय पिय करत पुकारो ॥ १ ॥
दाध्या[9] ऊपर लूण[10] लगायो, हिवड़े[11] करवत[12] सारो[13] ॥ २ ॥
उठि बैठो बृच्छ की डाली, बोल बोल कंठ सारो ॥ ३ ॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, हरि चरनाँ चित धारो ॥ ४ ॥

राग सोरठ

॥ शब्द १ ॥

छाँड़ो लँगर मोरी बहियाँ गहो ना ॥ टेक ॥
मैं तो नार पराये घर की, मेरे भरोसे गुपाल रहो ना ॥ १ ॥
जो तुम मेरी बहियाँ गहत हो, नयन जोर मेरे प्राण हरो ना ॥ २ ॥
बृन्दाबन की कुञ्ज गली में, रीत छोड़ अनरीत करो ना ॥ ३ ॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर. चरण कमल चित टारे टरो ना ॥ ४ ॥

---

(१) सावन छाय रहा है और मेरी चीर का पल्ला भीगता है। (२) देव। (३) बलदेव जी के भाई अर्थात् श्रीकृष्ण। (४) लगाया। (५) पिछले जन्म का। (६) वरदान। (७) चेत किया। (८) थी। (९) जले पर। (१०) नोन। (११) कलेजा। (१२) आरी। (१३) चलाया।

॥ शब्द २ ॥

प्रभु जी थें[1] कहाँ गयो नेहड़ी लगाय ॥ टेक ॥
छोड़ गया बिस्वास सँगाती, प्रेम की बाती बराय ॥ १ ॥
बिरह समँद में छोड़ गया छो, नेह की नाव चलाय ॥ २ ॥
मीरा कहे प्रभु कब रे मिलोगे, तुम बिन रह्यो न जाय ॥ ३ ॥

॥ शब्द ३ ॥

हरि तुम हरो जन की भीर[2] ॥ टेक ॥
द्रोपदी की लाज राख्यो तुम बढ़ायो चीर ॥ १ ॥
भक्त कारन रूप नरहरि, धर्यो आप सरीर ॥ २ ॥
हरिनकस्यप मार लीन्हो धर्यो नाहिन धीर ॥ ३ ॥
बूड़ते गजराज राख्यो कियो बाहर नीर ॥ ४ ॥
दास मीरा लाल गिरधर, दुख जहाँ तहँ पीर ॥ ५ ॥

॥ शब्द ४ ॥

साजन सुध ज्यूँ जाने त्यूँ लीजे हो ॥टेक॥
तुम बिन मेरे और न कोई कृपा रावरी कीजे हो ॥ १ ॥
दिवस न भूख रैन नहिं निद्रा यूँ तन पल पल छीजे हो ॥ २ ॥
मीरा कहे प्रभु गिरधर नागर मिल बिछुरन नहिं कीजे हो ॥ ३ ॥

॥ राग जैजैवंती ॥

सोवत ही पलका[3] में मैं तो, पलक लगी पल में पिउ आये ॥१॥
मैं जु उठी प्रभु आदर देन कूँ, जाग परी पिव ढूँढ़ न पाये ॥२॥
और सखी पिउ सूत गमाये, मैं जु सखी पिउ जागि गमाये ॥३॥
आज की बात कहा कहूँ सजनी, सुपना में हरि लेत बुलाये ॥४॥
बस्तु एक जब प्रेम की पकरी, आज भये सखि मन के भाये ॥५॥
वो माहरो सुने अरु गुनि है, बाजे अधिक बजाये ॥६॥
मीरा कहे सब कर मानो, भक्ति मुक्ति फल पाये ॥७॥

(१) तुम । (२) कष्ट । (३ पलँग ।

॥ राग मारू ॥

नैना लोभी रे बहुरि सके नहिं आय।
रोम रोम नख सिख सब निरखत, ललच रहे ललचाय ॥ १ ॥
मैं ठाढ़ी गृह आपने रे, मोहन निकसे आय।
सारँग ओट तजे कुल अंकुस, बदन दिये मुसकाय ॥ २ ॥
लोक कुटम्बी बरज बरजहीं, बतियाँ कहत बनाय।
चंचल चपल अटक नहिं मानत, पर हथ गये बिकाय ॥ ३ ॥
भली कहो कोइ बुरी कहो मैं, सब लई सीस चढ़ाय।
मीरा कहे प्रभु गिरधर के बिन, पल भर रह्यो न जाय ॥ ४ ॥

॥ राग कान्हरा ॥

आये आये जी म्हाँ रे महाराज आये, निज भक्तन के काज बनाये ॥१॥
तज बैकुंठ तज्यो गरुड़ासन, पावन बेग उठ धाये ॥२॥
जब ही दृष्टि परे नँद नंदन, प्रेम भक्ति रस प्याये ॥३॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, चरण कमल चित लाये ॥४॥

॥ राग देव गन्धार ॥

बसो मेरे नैनन में नंदलाल ॥ टेक ॥
मोहनी मूरति साँवरि सूरति, बने नैन बिसाल ॥ १ ॥
अधर सुधा रस मुरली राजित, उर बैजंती माल ॥ २ ॥
छुद्र घंटिका कटि तटि सोभित, नूपुर सब्द रसाल ॥ ३ ॥
मीरा प्रभु संतन सुखदाई, भक्त-बछल गोपाल ॥ ४ ॥

॥ राग कल्यान ॥

मेरो मन राम हि राम रटै रे ॥ टेक ॥
राम नाम जप लीजे प्राणी, कोटिक पाप कटै रे ॥ १ ॥
जनम जनम के खत[1] जु पुराने, नामहि लेत फटे रे ॥ २ ॥
कनक कटोरे इमृत भरियो, पीवत कौन नटै[2] रे ॥ ३ ॥
मीरा कहे प्रभु हरि अबिनासी, तन मन ताहि पटै रे ॥ ४ ॥

---

(१) कर्मों का लेखा। (२) रुकै।

॥ राग जंगला ॥

कभी म्हाँरी गली आव रे, जिया की तपत बुझाव रे ।
म्हाँरे मोहना प्यारे ॥ टेक ॥
तेरे साँवले बदन पर, कई कोट काम वारे ॥ १ ॥
तेरा खूबी के दरस पै, नैन तरसते म्हाँरे ॥ २ ॥
घायल फिरूँ तड़पती, पीड़ जाने नहिं कोई ॥ ३ ॥
जिस लागी पीड़ प्रेम की, जिन लाई जाने सोई ॥ ४ ॥
जैसे जल के सोखे[1], मीन क्या जिवें बिचारे ॥ ५ ॥
कृपा कीजे दरस दीजे, मारा नन्द के दुलारे ॥ ६ ॥

॥ राग भोग ॥

तुम जीमो[2] गिरधर लाल जी,
मीरा दासी अरज करे छे, सुनिये परम दयाल जी ॥ टेक ॥
छप्पन भोग छतीसो बिजन, पावो जन प्रतिपाल जी ॥ १ ॥
राज भोग आरोगो गिरधर, सनमुख राखो थाल जी ॥ २ ॥
मीरा दासी चरन उपासी, कीजे बेग निहाल जी ॥ ३ ॥

मिश्रित अंग

॥ शब्द १ ॥

अच्छे मीठे चाख चाख, बोर[3] लाई भीलणी ॥ टेक ॥
ऐसी कहा अचारवती[4], रूप नहीं एक रती ।
नीच कुल ओछी जात, अति ही कुचीलणी[5] ॥ १ ॥
जूठे फल लीन्हे राम, प्रेम की प्रतीत जाण ।
ऊँच नीच जाने नहीं, रस की रसीलणी ॥ २ ॥
ऐसी कहा बेद पढ़ी, छिन में विमाण चढ़ी ।
हरिजी सूँ बाध्यो हेत, बैकुण्ठ में झूलणी ॥ ३ ॥

(१) सूखने पर । (२) भोजन करो । (३) बेर । (४) नेमिन, शुद्ध । (५) मैली ।

ऐसी प्रीत करे सोइ, दास मीरा तरै जोइ।
पतित - पावन प्रभु, गोकुल अहीरणी ॥ ६ ॥

॥ शब्द २ ॥

स्याम मो सूँ ऐंडो डोले हो ॥ टेक॥
औरन सूँ खेले धमार, म्हाँ सू मुखहुँ न बोले हो ॥ १ ॥
म्हारी गलियाँ ना फिरे, वा के आँगण डोले हो ॥ २ ॥
म्हाँरी अँगुली ना छुवे, वा की बहियाँ मोरे हो ॥ ३ ॥
म्हाँरे अँचरा ना छुवे, वा को घूँघट खोले हो ॥ ४ ॥
मीरा को प्रभु साँवरो, रँग - रसिया डोले हो ॥ ५ ॥

॥ शब्द ३ ॥

जावादे री जावादे जोगी किसका मीत ॥ टेक ॥
सदा उदासी मोरी सजनी निपट अटपटी रीत ॥ १ ॥
बोलत बचन मधुर से मीठे जोरत नाहीं प्रीत ॥ २ ॥
हूँ जाणूँ या पार निभेगी छोड़ चला अध बीच ॥ ३ ॥
मीरा कहै प्रभु गिरधर नागर, प्रेम पियारा मीत ॥ ४ ॥

॥ शब्द ४ ॥

मेरो मन हरि सूँ जोर्‌यो, हरि सूँ जोर सकल सूँ तोर्‌यो ॥टेक॥
मेरी प्रीत निरंतर हरि सूँ, ज्यूं खेलत बाजीगर गोर्‌यो[१]।
जब मैं चली साध के दरसण, तब राणा मारण कूँ दैर्‌यो ॥१॥
जहर देन की घात बिचारी, निरमल जल में ले विष घोर्‌यो।
जब चरणोदक सुण्यो सरवणा, राम भरोसे मुख में ढोर्‌यो[२] ॥२॥
नाचन लगी जब घूंघट कैसो, लोक लाज तिणका ज्यूं तोर्‌यो।
नेकी बदी हूँ सिर पर धारी, मन हस्ती अंकुस दे मोर्‌यो ॥३॥
प्रगट निसान बजाय चली मैं, राणा राव सकल जग जोर्‌यो।
मीरा सबल धणी के सरणे, कहा भयो भूपति मुख मोर्‌यो ॥४॥

(१) मारवाड़ में नज़रबन्द को कहते हैं। (२) डाला।

॥ शब्द ५ ॥

तू मत बरजे माइड़ी[1], साधा दरसण जाती।
राम नाम हिरदे बसै, माहिले[2] मन माती[3] ॥ टेक ॥
माइ कहै सुन धीहड़ी[4], कहे गुण फूली।
लोक सोवै सुख नींदड़ी, थूँ क्यूँ रैणज[5] भूली ॥ १ ॥
गेली दुनियाँ बावली[6], ज्याँ कूँ राम न भावे।
ज्याँ रे हिरदे हरि बके, त्याँ कूँ नींद न आवे ॥ २ ॥
चौबास्याँ की बावड़ी, ज्याँ कूँ नीर न पीजे।
हरि नाले अमृत झरे, ज्याँ की आस करीजे ॥ ३ ॥
रूप सुरङ्गा राम जी, मुख निरखत जीजे।
मीरा ब्याकुल बिरहणी, अपणी कर लीजे ॥ ४ ॥

॥ शब्द ६ ॥

राम नाम मेरे मन बसियो, रसियो राम रिझाऊँ ए माय।
मैं मँद भागिण करम अभागिण, कीरत कैसे गाऊँ ए माय ॥१॥
बिरह पिंजर की बाड़[7] सखीरी, उठ कर जी हुलसाऊँ ए माय।
मन कूँ मार सजूँ[8] सतगुरु सूँ, दुरमत दूर गमाऊँ ए माय ॥२॥
डाको[9] नाम सुरत की डोरी, कड़्याँ[10] प्रेम चढ़ाऊँ ए माय।
ज्ञान को ढोल बन्यो अति भारी, मगन होय गुण गाऊँ ए माय ॥३॥
तन करूँ ताल मन करूँ मोरचँग, सोती सुरत जगाऊँ ए माय।
निरत करूँ मैं प्रीतम आगे, तो अमरापुर पाऊँ ए माय ॥४॥
मो अबला पर किरपा कीज्यो, गुण गोबिंद के गाऊँ ए माय।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, रज चरणाँ की पाऊँ ए माय ॥५॥

॥ शब्द ७ ॥

राणा जी थाँरो देसड़लो[11] रङ्ग रूढ़ो[12] ॥ टेक ॥
थाँरे मुलक में भक्ति नहीं छे, लोग बसें सब कूड़ो[13] ॥ ५ ॥

(१) मा। (२) अंतर। (३) निज मन में मगन हूँ। (४) बेटी। (५) रात। (६) बेसमझ। (७) बाड़ा। (८) मिलने की तैयारी करूँ। (९) डङ्का। (१०) कड़ियाँ जिनसे डंका या ढोल की डोरी को खींचते हैं। (११) देश, मुल्क। (१२) बुरा। (१३) झूठे।

पाट पटंबर सब ही मैं त्यागा, सिर बाँधूली जूड़ो[१] ॥ २ ॥
माणिक मोती सबही मैं त्यागा, तज दियो कर को चूड़ो[२] ॥ ३ ॥
मेवा मिसरी मैं सबही त्यागा, त्यागया छे सक्कर बूरो ॥ ४ ॥
तन की मैं आस कबहुँ नहिं कीनी, ज्यूँ रण माहीं सूरो ॥ ५ ॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, बर पायो मैं पूरो ॥ ६ ॥

॥ शब्द ८ ॥

राणा जी थें क्याने[३] राखो मोसूँ बेर ॥ टेक ॥
राणा जी म्हाँने असा[४] लगत है, ज्यूँ बिरछन[५] में केर[६] ॥१॥
मारू[७] धर[८] मेवाड़[९] मेरतो[१०], त्याग दियो थाँरो सहर ॥२॥
थाँरे रूस्याँ[११] राणा कुछ नाहिं बिगड़ै, अब हरि कीन्हीं मेहर ॥३॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, हठ कर पी गइ जहर ॥४॥

॥ शब्द ९ ॥

राणा जी मुझे यह बदनामी लगे मीठी ॥ टेक ॥
कोई निंदो कोई बिंदो, मैं[१२] चलूँगी चाल अपूठी[१३] ॥१॥
साँकली गली में सतगुर मिलिया, क्यूँ कर फिरूँ अपूठी ॥२॥
सतगुरु जी सूँ बातज[१४] करताँ, दुरजन लोगाँ ने दीठो[१५] ॥३॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, दुरजन जलो जा अँगीठी ॥४॥

॥ शब्द १० ॥

कमल दल लोचना तैं ने कैसे नाथ्यो भुजंग[१६] ॥ टेक ॥
पैसि पियाल[१७] काली नाग नाथ्यो, फण फण निर्त करंत ॥१॥
कूद पर्यो न डर्यो जल माहीं, और काहू नहिं संक ॥२॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, श्री बृन्दाबन चंद ॥३॥

---

(१) जटा । (२) चूड़ियाँ । (३) क्यों । (४) ऐसा । (५) पेड़ । (६) एक काँटेदार झाड़ जिसमें फल या छाया नहीं होती । (७) मारवाड़ देश । (८) घर । (९) देश का नाम जिसकी राजधानी उदयपुर है । (१०) मारवाड़ का एक नगर जहाँ मीराबाई का जन्म हुआ था । (११) नाराजगी से । (१२) चाहे कोई निंदा करे चाहे स्तुति । (१३) उल्टी । (१४) बातें । (१५) देखा । (१६) नाग । (१७) पाताल में पैठ कर ।

॥ शब्द ११ ॥

पिया मोहिं आरत तेरी हो।
आरत तेरे नाम की, मोहिं साँझ सबेरी हो ॥ १ ॥
या तन को दिवला[1] करूँ, मनसा की बाती हो।
तेल जलाऊँ प्रेम को, बालूँ दिन राती हो ॥ २ ॥
पटियाँ पारूँ गुरुज्ञान की, बुधि माँग सँवारूँ हो।
पीया तेरे कारणे, धन जोबन गारूँ हो ॥ ३ ॥
सेजड़िया बहु रङ्गिया, चंगा फूल बिछाया हो।
रैण गई तारा गिणत, प्रभु अजहुँ न आया हो ॥ ४ ॥
आया सावण भादवा, बर्षा ऋतु छाई हो।
स्याम पधार्‌या सेज में, सूती सैन जगाई हो ॥ ५ ॥
तुम हो पूरे साइयाँ, पूरा सुख दीजे हो।
मीरा ब्याकुल बिरहणी, अपणी कर लीजे हो ॥ ६ ॥

॥ शब्द १२ ॥

करम गत टारे नाहिं टरे ॥ टेक ॥
सतबादी हरिचंद से राजा, सो तो नीच घर नीर भरे ॥ १ ॥
पाँच पांडु अरु कुन्ती द्रोपती, हाड़ हिमालय गरे ॥ २ ॥
जज्ञ किया बलि लेण इंद्रासन, सो पाताल धरे ॥ ३ ॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, बिष से अमृत करे ॥ ४ ॥

॥ शब्द १३ ॥

पिया तेरे नाम लुभाणी हो।
नाम लेत तिरता सुण्या, जैसे पाहण पाणी[2] हो ॥ टेक ॥
सुकिरत कोई ना कियो, बहु करम कुमाणी[3] हो।
गणिका कीर पढ़ावताँ, बैकुण्ठ बसाणी हो ॥ १ ॥

(१) दीपक। (२) लंका के पुल के पत्थर राम नाम लिख देने से समुद्र पर तैरते थे। (३) बहुत से खोटे कर्म कमाये।

अरध नाम कुञ्जर लियो, वा की अवध घटानी हो।
गरुड़ छाँड़ि हरि धाइया, पसु जूण[1] मिटाणी हो ॥ २ ॥
अजामेल से ऊधरे[2], जम त्रास नसानी हो।
पुत्र हेतु पदवी दई, जग सारे जाणी हो ॥ ३ ॥
नाम महातम गुरु दियो, परतीत पिछाणी हो।
मीरा दासी रावली, अपणी कर जाणी हो ॥ ४ ॥

॥ शब्द १४ ॥

मेरे तो एक राम नाम दूसरा न कोई।
दूसरा न कोई साधो सकल लोक जोई ॥ टेक ॥
भाई छोड़्या बँधु छोड़्या छोड़्या सगा सोई।
साध संग बैठ बैठ लोक लाज खोई ॥ १ ॥
भगत देख राजी हुई जगत देख रोई।
प्रेम नीर सींच सींच बिष बेल धोई ॥ २ ॥
दधि मथ घृत काढ़ लियो डार दई छोई।
राणा बिष को प्यालयो भेज्यो पीय मगन होई ॥ ३ ॥
अब तो बात फैल पड़ी जाणे सब कोई।
मीरा राम लगण लगी होणी होय सो होई ॥ ४ ॥

॥ शब्द १५ ॥

मेरे मन राम नामा बसी।
तेरे कारण स्याम सुन्दर सकल लोगाँ हँसी ॥ १ ॥
कोई कहे मीरा भई बौरी कोई कहे कुल-नसी।
कोई कहे मीरा दीप आगरी नाम पिया सूँ रसी ॥ २ ॥
खाँड़[3] धार भक्ती की न्यारी, काटि है जम फँसी[4]।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर सब्द सरोवर धसी ॥ ३ ॥

(१) योनि। (२) उद्धार पाया। (३) खाँड़ा। (४) फाँसी।

॥ शब्द १६ ॥

मैं तो लागि रहौं नँदलाल से ॥ टेक ॥

हमरे बाटहिं दूज न यार[1]।
लाल लाल पगिया झिन झिन बार[2] ॥ १ ॥

साँकर खटुलना दुइ जन बीच।
मन कइले बरषा तन कइले कीच ॥ २ ॥

कहाँ गइलें बछरू कहँ गइलीं गाय।
कहँ गइलें धेनु चरावन राय ॥ ३ ॥

कहँ गइलीं गोपी कहँ गइलें बाल।
कहँ गइले मुरली बजावनहार ॥ ४ ॥

मीरा के प्रभु गिरधर लाल।
तुम्हरे दरस बिनु भइल बेहाल ॥ ५ ॥

॥ शब्द १७ ॥

गोबिंद सूँ प्रीत करत, तबहिं क्यूँ न हटकी।
अब तो बात फैल परी, जैसे बीज बट की ॥ १ ॥
बीच को बिचार नाहिं, छाँय परी तट[3] की।
अब चूको तो ठौर नाहिं, जैसे कला नट की ॥ २ ॥
जल की घुरी[4] गाँठ परी, रसना गुन रट की।
अब तो छुड़ाय हारी, बहुत बार भटकी ॥ ३ ॥
घर घर में घोल मठोल, बानी घट घट की।
सब ही कर सीस धारि, लोक लाज पटकी ॥ ४ ॥
मद की हस्ती[5] समान, फिरत प्रेम लटकी।
दास मीरा भक्ति बुन्द, हिरदय बिच गटकी ॥ ५ ॥

॥ शब्द १८ ॥

अब नहिं बिसरूँ, म्हाँ रे हिरदे लिख्यो हरि नाम।
म्हाँ रे सतगुरु दियो बताय, अब नहिं बिसरूँ रे ॥ टेक ॥

(१) मेरे दूसरा प्रीतम नहीं है। (२) महीन बाल। (३) नदी का किनारा। (४) जल के घूमने से भँवर बन जाती है। (५) मस्त हाथी।

मीरा बैठी महल में रे, ऊठत बैठत राम।
सेवा करस्याँ साध की, म्हाँरे और न दूजो काम ॥ १ ॥
राणो जी बतलाइया[1], कइ[2] देणो जवाब।
पण[3] लागो हरि नाम सूँ, म्हाँरे दिन दिन दूनो लाभ ॥ २ ॥
सीप भर्‌यो पानी पिवे रे, टाँक[4] भर्‌यो अन्न खाय।
बतलायाँ[1] बोली नहीं रे, राणोजी गया रिसाय[5] ॥ ३ ॥
बिष रा प्याला राणोजी भेज्या, दीजो मेड़तणी के हाथ।
कर चरणामृत पी गई, म्हाँरा सबल धणी का साथ ॥ ४ ॥
बिष को प्यालो पी गई, भजन करे उस ठौर।
थाँरी मारो ना मरूँ, म्हाँरी राखणहारो और ॥ ५ ॥
राणोजी मो पर कोप्यो[6] रे, मारूँ एकन सेल[7]।
मार्‌याँ पराछित लागसी, माँ ने दीजो पीहर[8] मेल[9] ॥ ६ ॥
राणो मो पर कोप्यो रे, रती न राख्यो मोद[10]।
ले जाती बैकुण्ठ में, यो तो समझ्‌यो नहीं सिसोद[11] ॥ ७ ॥
छापा तिलक बनाइया, तजिया सब सिंगार।
मैं तो सरने राम के, भल निन्दो संसार ॥ ८ ॥
माला म्हाँरे देवड़ी[12], सील बरत सिंगार।
अब के किरपा कीजियो, हूँ तो फिर बाँधूँ तलवार ॥ ९ ॥
रथाँ बैल जुताय के, ऊँटाँ कसियो भार।
कैसे तोड़ूँ राम सूँ, म्हाँरो भो भो रो भरतार[13] ॥ १० ॥
राणो साँड़्यो[14] मोकल्यो[15], जाज्यो एके दौड़।
कुल की तारण अस्तरी, या तो मुरड़[16] चली राठोड़[17] ॥ ११ ॥

---

(१) पूछा। (२) कहना। (३) बाजी। (४) चार माशा। (५) गुस्सा हुआ। (६) गुस्सा हुआ। (७) बरछी। (८) मायका। (९) भेजना। (१०) हर्ष। (११) उदयपुर के राना की जाति का नाम सिसोद है। (१२) भगवंत की। (१३) जन्मान जन्म का पति। (१४) ऊँट। (१५) भेजा। (१६) मुड़ कर या रूठ कर। (१७) मीरा के बाप की जाति।

साँड़्यौ पाछो फेर्‌यो रे, परत न देस्याँ पाँव[1]।
कर सूरा पण नीसरी[2], म्हाँरे कुण राणे कुण राव ॥१२॥
संसारी निन्दा करे रे, दुखियो सब परिवार।
कुल सारो हो लाजसी, मीरा थें जो भया जी ख्वार[3] ॥१३॥
राती माती प्रेम की, विष भगत को मोड़।
राम अमल माती रहे, धन मीरा राठोड़ ॥१४॥

॥ शब्द १९ ॥

म्हाँने चाकर राखो जी, गिरधारी लल्ला चाकर राखो जी ॥ टेक ॥
चाकर रहसूँ बाग लगासूँ, नित उठ दरसन पासूँ।
बृन्दाबन की कुञ्ज गलिन में, गोबिंद लीला गासूँ ॥ १ ॥
चाकरी में दरसन पाऊँ, सुमिरन पाऊँ खरचो।
भाव भगति जागीरी पाऊँ, तीनों बाताँ सरसी ॥ २ ॥
मोर मुकुट पीताम्बर सोहे, गल बैजंती माला।
बृन्दाबन में धेनु चरावे, मोहन मुरली वाला ॥ ३ ॥
ऊँचे ऊँचे महल बनाऊँ, बिच बिच राखूँ बारी।
साँवरिया के दरसन पाऊँ, पहिर कुसुम्मी सारी ॥ ४ ॥
जोगी आया जोग करन कूँ, तप करने सन्यासी।
हरी भजन कूँ साधू आये, बृन्दाबन के बासी ॥ ५ ॥
मीरा के प्रभु गहिर गँभीरा, हृदे रहो जी धीरा।
आधी रात प्रभु दरसन दीन्हो, जमुना जी के तीरा ॥ ६ ॥

॥ शब्द २० ॥

मीरा लागो रंग हरी, औरन सब रंग अटक परी[4] ॥ टेक ॥
चूड़ो म्हाँरे तिलक अरु माला, सील बरत सिंगारो।
और सिंगार म्हाँरे दाय[5] न आवे, ये गुरु ज्ञान हमारो ॥ १ ॥

---

(१) कभी पाँव न रक्खूँगी। (२) बहादुरों की नाईं प्रण करके निकली हूँ। (३, खराब। (४) ओट पड़ गई। (५) पसन्द।

कोइ निन्दो कोइ बिन्दो मैं तो, गुन गोबिंद का गास्याँ ।
जिन मारग म्हाँरा साध पधारे, उन मारग मैं जास्याँ ॥२॥
चोरि न करस्याँ जिव न सतास्याँ, काँई[1] करसी म्हाँरो कोय ।
गज से उतर के खर नहिं चढ़स्याँ, ये तो बात न होय ॥३॥
सती न होस्याँ गिरधर गास्याँ, म्हाँरा मन मोहो घणनामी ।
जेठ बहू को नातो न राणा जी, हूँ सेवक थें स्वामी ॥४॥
गिरधर कंथ[2] गिरधर धनि म्हाँरे, मात पिता वोइ भाई ।
थें थाँरे मैं म्हाँरे[3] राणा जी, यूँ कहे मीरा बाई ॥५॥

॥ शब्द २१ ॥

अरज करे छे मीरा राकड़ी, ऊभी ऊभी[4] अरज करे छे ॥
मणि-धर[5] स्वामी म्हाँरे मंदिर पधारो, सेवा करूँ दिन रातड़ी ॥१॥
फुलना रे तोड़ा ने[6] फुलना रे गजरा, फुलना रे हार फुलपाँखड़ी॥२॥
फुलना रे गादी ने फुलना रे तकिया, फुलना र याथरी[7] पछेड़ी[8] ॥३॥
पय पकवान मिठाई ने मेवा, सेवैयाँ ने सुंदर दहींड़ी[9] ॥४।
लवंगसुपारी ने एलची[10], तजवाला काथा[11] चुना री पान बीड़ी ॥५॥
सेज बिछाऊँ ने पासा मँगाऊँ, रमवा[12] आवो तो जाय रातड़ी ॥६॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, (बाला) तम ने जोताँठरे आँखड़ी[13] ॥७॥

॥ शब्द २२ ॥

आज म्हाँरे साधू जन नो[14] संग रे, राणा म्हाँरा भाग भल्याँ॥ टेक॥
साधू जन नो संग जो करिये, चढ़ेते चौगणो रङ्ग रे ॥ १ ॥
साकट[15] जन नो संग न करिये, पड़े भजन में भङ्ग रे ॥ २ ॥
अठसठ तीरथ संतों ने चरणे, कोटि कासी ने सोय गङ्ग रे ॥ ३ ॥
निन्दा करसे नरक कुण्ड माँ जासे, थासे[16] आँधला अपङ्ग रे ॥ ४ ॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, संतों नीरज म्हाँरे अङ्ग रे ॥ ५ ॥

(१) क्या । (२) पति । (३) तुम अपनी राह मैं अपनी राह । (४) खड़ी खड़ी । (५) जड़ाऊ गहने पहिने हुए । (६) और । (७) चद्दर । (८) पिछवई । (९) एक मिठाई का नाम । (१०) इलायची । (११) कत्था । (१२) खेलना । (१३) प्यारे तुम को देख कर मेरी आँखें ठंडी हुई । (१४) का । (१५) भक्तिहीन । (१६) हो जायगा ।

॥ शब्द २३ ॥

लेताँ लेताँ राम नाम रे, लोकड़ियाँ[1] तो लाजे मरे छे ॥ टेक ॥
हरि मंदिर जाताँ पावलिया[2] रे दूखे, फिरि आवे सारो गाम[3] रे ॥१॥
झगड़ो थाय[4] त्याँ[5] दौड़ी ने जायरे, मुकीने[6] घर ना काम रे ॥२॥
भाँड भवैया गनिका नृत्य करताँ, बेसी[7] रहे चारे जाम[8] रे ॥३॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, चरण कमल चित हाम रे ॥४॥

॥ शब्द २४ ॥

आवत मोरी गलियन में गिरधारी, मैं तो छुप गई लाज की मारी ॥टेक॥
कुसुमल[9] पाग के केसरिया जामा, ऊपर फूल हजारी।
मुकट ऊपरे छत्र बिराजे, कुण्डल की छबि न्यारी ॥ १ ॥
केसरी चीर दरयाई को लेंगो[10], ऊपर अँगिया भारी।
आवते देखी किसन मुरारी, छुप गई राधा प्यारी ॥ २ ॥
मोर मुकट मनोहर सोहे, नथनी की छबि न्यारी।
गल मोतिन की माल बिराजे, चरण कमल बलिहारी ॥ ३ ॥
ऊभी[11] राधा प्यारी अरज करत है, सुणजे किसन मुरारी।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, चरण कमल पर वारी ॥ ४ ॥

॥ शब्द २५ ॥

मीरा मगन भई हरि के गुण गाय ॥ टेक ॥
साँप पिटारा राणा भेज्या, मीरा हाथ दियो जाय।
न्हाय धोय जब देखण लागी, सालिगराम गई पाय ॥ १ ॥
जहर का प्याला राणा भेज्या, अमृत दीन्ह बनाय।
न्हाय धोय जब पीवण लागी, हो अमर अँचाय[12] ॥ २ ॥
सूल सेज राणा ने भेजी, दीज्यो मीरा सुलाय।
साँझ भई मीरा सोवण लागी, मानो फूल बिछाय ॥ ३ ॥

---

(१) लोग। (२) पाँव। (३) गाँव। (४) हो। (५) तहाँ। (६) छोड़कर। (७) बैठी। (८) पहर। (९) कुसुम के रंग की। (१०) लहँगा। (११) खड़ी। (१२) पीकर।

मीरा के प्रभु सदा सहाई, राखे बिघन हटाय।
भजन भाव में मस्त डोलती, गिरधर पै बलि जाय ॥ ४ ॥

॥ शब्द २६ ॥

राणा जी म्हाँरी प्रीत पुरबली मैं क्या करूँ ॥ टेक ॥
राम नाम बिन घड़ी न सुहावे, राम मिले म्हाँरा हियरा ठराय[१]।
भोजनियाँ नहिं भावे म्हाँने, नींदड़ली नहिं आय ॥ १ ॥
बिष का प्याला भेजिया जी, जावो मीरा पास।
कर चरणामृत पी गई, म्हाँरे रामजी के बिस्वास ॥ २ ॥
बिष का प्याला पी गई जो, भजन करे राठोर[२]।
थाँरी मारी न मरूँ, म्हाँरो राखणहारो ओर ॥ ३ ॥
छापा तिलक बनाविया जी, मन में निस्चय धार।
रामजी काज सँवारिया जी, म्हाँने भावें गरदन मार ॥ ४ ॥
पेयाँ[३] बासक[४] भेजिया जी, ये है चन्दनहार।
नाग गले में पहिरिया, म्हाँरो महलाँ भयो उजार ॥ ५ ॥
राठौड़ाँ की धीयड़ी[५] जी, सीसोद्याँ[६] के साथ।
ले जाती बैकुंठ को, म्हाँरी नेक न मानी बात ॥ ६ ॥
मीरा दासी राम की जी, राम गरीब-निवाज।
जन मीरा की राखजो, कोइ बाँह गहे की लाज ॥ ७ ॥

॥ शब्द २७ ॥

राणा जी मैं साँवरे रंग राची ॥ टेक ॥
साज सिंगार बाँध पग घुघरू, लोक लाज तज नाची ॥ १ ॥
गई कुमिति लइ साध की संगत, भगत रूप भई साँची ॥ २ ॥
गाय गाय हरि के गुन निस दिन, काल ब्याल सों बाची ॥ ३ ॥
उन बिन सब जग खारो लागत, और बात सब काची ॥ ४ ॥
मीरा श्री गिरधरन लाल सों, भगति रसाली याची[७] ॥ ५ ॥

---
(१) शीतल होता है। (२) मीरा जी राठौर जाति की थी। (३) संदूक। (४) साँप। (५) बेटी। (६) राना की जाति का नाम। (७) माँगी।

॥ शब्द २८ ॥

राणाजी मैं गिरधर रे घर जाऊँ।
धर म्हाँरो साचो प्रीतम, देखत रूप लुभाऊँ ॥ १ ॥
पड़े तब ही उठ जाऊँ, भोर भये उठ आऊँ।
दिना वा के सँग खेलूँ, ज्यों रीझै ज्यों रिझाऊँ ॥ २ ॥
वस्त्र पहिरावे सोई पहिरूँ, जो दे सोई खाऊँ।
उनके प्रीत पुरानी, उन बिन पल न रहाऊँ ॥ ३ ॥
हूँ बैठावे जित ही बैठूँ, बेचे तो बिक जाऊँ।
मीरा गिरधर के ऊपर, बार बार बल जाऊँ ॥ ४ ॥

॥ शब्द २९ ॥

राणा जी मैं तो गोबिंद का गुण गास्याँ ॥ टेक ॥
रणामृत का नेम हमारे, नित उठ दरसण जास्याँ ॥ १ ॥
रे मन्दिर में निरत करास्याँ, घूँघरिया घमकास्याँ ॥ २ ॥
म नाम का जहाज चलास्याँ, भवसागर तर जास्याँ ॥ ३ ॥
ह संसार बाड़[1] का काँटा, ज्याँ संगत नहिं जास्याँ ॥ ४ ॥
ीरा कहे प्रभु गिरधर नागर, निरख परख गुण गास्याँ ॥ ५ ॥

॥ शब्द ३० ॥

म तने[2] रंग राची, राणा मैं तो साँवलिया रंग राची रे ॥टेक॥
ाल पखावज मिरदंग बाजा, साधों आगे नाची रे ॥ १ ॥
ोई कहे मीरा भई बावरी, कोई कहे मद माती रे ॥ २ ॥
बिष का प्याला राणा भर भेज्या, अमृत कर आरोगी[3] रे ॥ ३ ॥
ीरा कहे प्रभु गिरधर नागर, जनम जनम की दासी रे ॥ ४ ॥

॥ शब्द ३१ ॥

राणाजी तैं जहर दियो मैं जाणी ॥ टेक ॥
ैसे कंचन दहत अगिन में, निकसत बाराबाणी[4] ॥ १ ॥
ोक लाज कुल काण जगत की, दइ बहाय जस पाणी ॥ २ ॥

(१) बाड़ा। (२) के। (३) पी लिया। (४) खालिस कुन्दन।

अपने घर का परदा करले, मैं अबला बौराणी ॥ ३ ॥
तरकस तीर लग्यो मेरे हियरे, गरक[१] गयो सनकाणी[२] ॥ ४ ॥
सब संतन पर तन मन वारों, चरण कमल लपटाणी ॥ ५ ॥
मीरा को प्रभु राख लई है, दसी अपणीं जाणी ॥ ६ ॥

॥ शब्द ३२ ॥

सीसोद्या[३] राणो, प्यालो म्हाँने क्यूँ रे पठायो ॥ टेक ॥
भली बुरी तो मैं नहिं कीन्ही, राणा क्यूँ है रिसायो।
थाँने म्हाँने देह दिवी है, ज्याँ रो हरि गुण गायो[४] ॥ १ ॥
कनक कटोरे ले विष घोल्यो, दयाराम पंडो लायो।
अठी उठी[५] तो मैं देख्यो, कर चरणामृत पायो ॥ २ ॥
आज काल की मैं नहिं राणा, जद[६] यह ब्रह्मंड छायो।
मेड़तियाँ घर जन्म लियो है, मीरा नाम कहायो ॥ ३ ॥
प्रहलाद की प्रतिज्ञा राखी, खंभ फाड़ बेगो[७] धायो।
मीरा कहे प्रभु गिरधर नागर, जन को बिड़द[८] बढ़ायो ॥ ४ ॥

॥ शब्द ३३ ॥

हेली म्हाँ सूँ हरि बिन रह्यो न जाय ॥ टेक ॥
सासु लड़े मेरी नणद खिजावे, राणा रह्या रिसाय ॥ १ ॥
पहरो भी राख्यो चौकी बिठारयो, ताला दियो जड़ाय ॥ २ ॥
पूर्व जन्म की प्रीत पुराणी, सो क्यूँ छोड़ी जाय ॥ ३ ॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, और न आवे म्हाँरी दाय[९] ॥ ४ ॥

॥ शब्द ३४ ॥

मुझअबलानेमोटीनीराँत[१०]थई[११]सामलो[१२]घरेनुम्हाँरेसाँचु[१३]रे॥टेक॥
बाली घड़ाऊँ[१४] बीठल वर केरी, हार हरि नो म्हाँरे हइये रे।
चीन माल चतुरभुज चुड़लो[१५], सिद सोनी[१६] घरे जइये रे ॥१॥

---

(१) डूबना, घुसना। (२) चुभना। (३) राना की जाति। (४) जिस मालिक ने तुम्हें और हमें दोनों को देह दी है उसी का मैंने गुन गाया। (५) इधर उधर।। (६) जब। (७) जल्दी से। (८) यश, नाम। (९) पसंद (१०) भरोसा। (११) हुआ। (१२) साँवलिया। (१३) आया। (१४) कान की बाली गढ़वाऊँ। (१५) चूड़ा। (१६) सिद्ध सुनार।

झाँझरिया जग जीवन केरा, किस्न गलाँ[1] री कंठी रे।
बिछुवा घुँघरा राम नरायण, अनवट अंतरजामी रे॥ २॥
पेटी घड़ाऊँ पुरुसोतम केरी, टीकम नाम नूँ तालो रे।
कुञ्ची[2] कराऊँ करुना नन्द केरी, तेमाँ घैणा[3] नूँ मारूँ रे॥ ३॥
सासर बासो सजी ने बैठी, हवे[4] नथी काइ काँचू[5] रे।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, हरि नु चरणे जाँचूँ रे॥ ४॥

॥ शब्द ३५॥

[मीरा]–माई म्हाँने सुपने में, परण[6] गया जगदीस।
सोती को सुपना आविया जी, सुपना बिस्वा बीस॥ टेक॥
[मा]–गैली[7] दीखे मीरा बावली, सुपना आल जंजाल।
[मीरा]–माई म्हाँने सुपने में, परण गया गोपाल॥ १॥
अंग अंग हल्दी मैं करी जी, सुधे[8] भीज्यो गात।
माई म्हाँने सुपने में, परण गया दीनानाथ॥ २॥
छप्पन कोट जहाँ जान[9] पधारे, दुलहा श्री भगवान।
सुपने में तोरन बाँधियो जी, सुपने में आई जान॥ ३॥
मीरा को गिरधर मिल्या जी, पूर्ब जनम के भाग।
सुपने में म्हाँने परण गया जी, हो गया अचल सुहाग॥ ४॥

॥ शब्द ३६॥

इन सरवरिया पाल[10], मीरा बाई साँपड़े[11]।
साँपड़ किया अस्नान, सुरज स्वामी जप करे॥ १॥
[प्रश्न] होय बिरङ्गी[12] नार, डगराँ बिच क्यों खड़ी।
काई थारो पीहर दूर, घराँ सासू लड़ी॥ २॥
[उत्तर] नहीं म्हाँरो पीहर दूर, घराँ सासू लड़ी।
चल्यो जा रे असल गँवार, तुझे मेरी क्या पड़ी॥ ३॥

---

(१) गले की। (२) कुंजी। (३) गहना। (४) अब। (५) चोली। (६) ब्याह। (७) पागल। (८) अमृत। (९) बारात। (१०) किनारे। (११) नहाती है। (१२) उदास।

गुरु म्हाँरा दीनदयाल, हीराँ का पारखी।
दियो म्हाँने ज्ञान बताय, सँगत कर साध री॥ ४॥
इन सरवरिया रा हंस, सुरँग थारी पाँखड़ी।
राम मिलन कद होय, फड़ोके म्हाँरी आँख री॥ ५॥
राम गये बनग्राम को, सब रँग ले गये।
ले गये म्हाँरी काया को सिंगार, तुलसी की माला दे गये॥ ६॥
खोई कुल की लाज, मुकँद थारे कारने।
बेगहि लीजो सम्हाल, मीरा पड़ी बारने[1]॥ ७॥

॥ शब्द ३७ ॥

रे सांवलिया म्हाँरे आज रँगीली, गणगोर[2] छे जी॥ टेक॥
काली पीली बदली में बिजली चमके, मेघ घटा घनघोर छे जी॥१॥
दादुर मोर पपीहा बोले, कोयल कर रही सोर छे जी॥२॥
आप रँगीला सेज रँगीली, और रँगीलो सारो साथ छे जी॥३॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, चरनाँ में म्हाँरो जोर[3] छे जी॥४॥

॥ शब्द ३८ ॥

सुन लीजे बिनती मोरी, मैं सरन गही प्रभु तोरी॥ टेक॥
तुम तो पतित अनेक उधारे, भवसागर से तारयो॥ १॥
मैं सब का तो नाम न जानों, कोइ कोइ भक्त बखानों॥ २॥
अम्बरीक सुदामा नामी, पहुँचाये निज धामा॥ ३॥
ध्रुव जो पाँच बरस को बालक, दरस दियो घनस्यामा॥ ४॥
धना भक्त का खेत जमाया, कबिरा बैल चराया॥ ५॥
सेवरी के जूठे फल खाये, काज किये मन भाये॥ ६॥
सदना औ सेना नाई को, तुम लीन्हा अपनाई॥ ७॥
करमा की खिचड़ी तुम खाई, गनिका पार लगाई॥ ८॥
मीरा प्रभु तुम्हरे रँग राती, जानत सब दुनियाई॥ ९॥

इति मीराबाई की शब्दावली सम्पूर्णम्

(१) दरवाजे पर। (२) स्त्रियों के एक त्योहार का नाम। (३) दावा।